रजिस्ट्री सं. डी.एल.- 33004/99 REGD. No. D. L.-33004/99

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

सी.जी.-डी.एल.-अ.-06012022-232476
CG-DL-E-06012022-232476

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 40] नई दिल्ली, बुधवार, जनवरी 5, 2022/पौष 15, 1943
No. 40] NEW DELHI, WEDNESDAY, JANUARY 5, 2022/PAUSHA 15, 1943

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 5 जनवरी, 2022

का.आ. 41(अ).—प्रारुप अधिसूचना भारत के राजपत्र, असाधारण में भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन, मंत्रालय की अधिसूचना सं. का.आ. 123 (अ), तारीख 12 जनवरी, 2021, द्वारा प्रकाशित की गई थी जिसमें ऐसे सभी व्यक्तियों से, जिनकी उससे प्रभावित होने की संभावना थी, उस तारीख से, जिसको उक्त अधिसूचना को अन्तर्विष्ट करने वाली राजपत्र की प्रतियां जनता को उपलब्ध करा दी गई थीं, साठ दिन की अवधि के भीतर आक्षेप और सुझाव आमंत्रित किए गए थे;

और, उक्त प्रारूप अधिसूचना को अन्तर्विष्ट करने वाली राजपत्र की प्रतियां जनता को तारीख 13 जनवरी, 2021 को उपलब्ध करा दी गई थी;

और, पूर्वोक्त प्रारुप अधिसूचना के प्रत्युत्तर में व्यक्तियों और पणधारियों से कोई आक्षेप और सुझाव प्राप्त नहीं हुए;

और, शिकारी देवी वन्यजीव अभयारण्य 29.94 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल में फैला हुआ है और हिमाचल प्रदेश राज्य में मंडी जिला में करसोग में मुख्यालय के साथ करसोग भाग पर शिमला से 103 किलोमीटर और जंजेहली भाग से 15 किलोमीटर की दूरी में स्थित है।

और, शिकारी देवी वन्यजीव अभयारण्य को अधिसूचना सं.एफएफई-बी-एफ(6)-11/2005-II/शिकारी द्वारा तारीख 7 जून, 2013 से वन्यजीव अभयारण्य का दर्जा दिया गया था। इस अभयारण्य में स्थानिक वनस्पति और जीवजंतु की काफी विविधता है और यह पारिस्थितिकी, जीवजंतु, वनस्पति, भू-आकृति और मनोरंजनात्मक और अनुसंधान/शिक्षण संदर्भ से भी काफी महत्त्वपूर्ण है;

और, शिकारी देवी वन्यजीव अभयारण्य में ऊपरी चीड़ पाइन वन, आर्द्र देवदार वन, पश्चिमी मिश्रित शंकुधारी वन, खरसू ओक वन, बान ओक वन है। शिकारी देवी वन्यजीव अभयारण्य में और आसपास मुख्य वनस्पति में देवदार (*केदरूस देवदार),* फर

(अबिइस पिंदरो), स्प्रूस (*पिकेया स्मिथअना*), कैल *(पिनुस वाल्लिचिअना),* बान *(क्यूरकुस लुकोट्रिचोफोरा),* खरसु (*क्यूरकुस सेमेकार्पिफोलिया*), प्रूनस (*प्रूनस स्पा*), अकेर (*अकेर पिकतम*), जुग्लांस (*जुग्लांस रेगिया*), बुक्स (*बुक्स वाल्लिचिअना*), रहोडोडेंड्रोन (*रहोडोडेंड्रोन अरबोरेतम*), केलटिस (*केलटिस ऑस्ट्रलिस*), बेतुला (*बेतुला उटीलिस*), अलनुस *(अलनुस निटिडा),* एस्कुलूस (*एस्कुलूस इंडिका*) पाए जाते हैं;

और, अभयारण्य में मुख्य जीवजंतु प्रजातियां तेंदुआ (*पेन्थेरा प्रज्घूस*), मुंजक (*मुन्टिएक्स मुन्तजक*), काला भालू (*सेलेनारक्टस थिबेटेनस*), गोरल(*नेमोराएडस गोरल*), हिमालयन मोनल(*लोफोफोरूस इंमपेजानुस*), सियार, लोमड़ी, नेवला, हिमालयन येलो थ्रोटेड मार्टेन *(मार्टेस फ्लाविगुला),* हिमालयन पाम सिवेट (*पगोमा लारवाटा*), फ्लाइंग गिलहरी (*पेटोरिस्टा पेटोरिस्टा),* तेंदुआ बिल्ली (*परिवेलुरुस बैंगालेंसिस*), बनबिलार (*फेलिस चाउस*), बंदर (*मकाका मुलाट्टा*), लंगूर (*प्रेस्बिटिस एंटेलस*), मॉनिटर छिपकली (*वरानुस स्पा*), आदि पाई जाती है;

और, यह क्षेत्र हिमालय क्षेत्र में प्रतिबंधित स्थानिक और अतिसंवेदनशील हिमालयन फीजेन्ट *(*लोकोफोरस इम्पेजनक*)* की उपस्थिति के कारण महत्त्वपूर्ण पक्षी स्थल के रूप में पहचाना जाता है। अन्य महत्त्वपूर्ण पक्षी प्रजातियों में चकोर (*अलेकटोरिस चकोर*), कोकलास फीजेंट (*पुकरासिया माकरोलोफा*), कलिज फीजेंट (*लोफुरा लेउकोमेलानोस*), ग्रे फीजेंट (*पेरडिक्स पेरडिक्स*), काला तीतर, हिमालायन ग्रिफ्फोन, हिमालयन कठफोड़वा आदि शामिल है;

और, शिकारी देवी वन्यजीव अभयारण्य और इसका पारिस्थितिकी संवेदी जोन औषधीय पौधों की संख्या को आश्रय प्रदान करता है जिसमें पतिस (*अकोंटिनम स्पा.*), शिंगली मिनगली (*डिओस्कोरेया डेलटोआईडिया*), गुचि (*मोरचेल्ला इसकुलांटा),* बनाकशा (*विओला स्पा),* सलाम-पंजा *(ओरचिस लतिफोलिया)* शामिल है;

और, शिकारी देवी वन्यजीव अभयारण्य और इसके पारिस्थितिकी संवेदी जोन कई दुर्लभ और लुप्तप्राय प्रजातियों के लिए बफर जोन का कार्य करता है। क्षेत्र सतलुज और ब्यास नदी के ऊपरी जलग्रहण क्षेत्र का कार्य करता है और खड़ी ढलान को मृदा कटाव का खतरा है;

और, शिकारी देवी वन्यजीव अभयारण्य के चारों ओर के क्षेत्र को, जिसका विस्तार और सीमाएं इस अधिसूचना के पैराग्राफ 1 में विनिर्दिष्ट हैं, पारिस्थितिकी, पर्यावरणीय और जैव-विविधता की दृष्टि से पारिस्थितिकी संवेदी जोन के रूप में सुरक्षित और संरक्षित करना तथा उक्त पारिस्थितिकी संवेदी जोन में उद्योगों या उद्योगों की श्रेणियों के प्रचालन तथा प्रसंस्करण को प्रतिषिद्ध करना आवश्यक है;

अतः, अब, केन्द्रीय सरकार, पर्यावरण (संरक्षण) नियम, 1986 के नियम 5 के उपनियम (3) के साथ पठित पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 (1986 का 29) (जिसे इस अधिसूचना में इसके पश्चात् पर्यावरण अधिनियम कहा गया है) धारा 3 की उपधारा (1) तथा उपधारा (2) के खंड (v) और खंड (xiv) और उपधारा (3) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हिमाचल प्रदेश राज्य के मंडी जिला में शिकारी देवी वन्यजीव अभयारण्य की सीमा के चारों ओर 50 मीटर से 2 किलोमीटर तक विस्तारित क्षेत्र को शिकारी देवी वन्यजीव अभयारण्य पारिस्थितिकी संवेदी जोन (जिसे इसमें इसके पश्चात् पारिस्थितिकी संवेदी जोन कहा गया है) के रूप में अधिसूचित करती है, जिसका विवरण निम्नानुसार है, अर्थात् :-

1. **पारिस्थितिकी संवेदी जोन का विस्तार और सीमा.**- (1) पारिस्थितिकी संवेदी जोन का विस्तार शिकारी देवी वन्यजीव अभयारण्य की सीमा के चारों ओर 50 मीटर से 2 किलोमीटर के साथ 19.2045 वर्ग किलोमीटर तक क्षेत्रफल विस्तृत होगा।

(2) शिकारी देवी वन्यजीव अभयारण्य और इसके पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा का विवरण **उपाबंध-I** के रूप में संलग्न है।

(3) सीमा विवरण और अक्षांशों और देशांतरों के साथ पारिस्थितिकी संवेदी जोन को सीमांकित करते हुए शिकारी देवी वन्यजीव अभयारण्य के मानचित्र **उपाबंध–IIक, उपाबंध-IIख** और **उपाबंध-IIग** के रूप में संलग्न है।

(4) शिकारी देवी वन्यजीव अभयारण्य और पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा के भू-निर्देशांकों की सूची **उपाबंध -III** की **सारणी क** और **सारणी ख** में दी गई है।

(5) मुख्य बिंदुओं पर भू- निर्देशांको के साथ पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत आने वाले ग्रामों की सूची **उपाबंध-IV** के रूप में संलग्न है।

(6) पारिस्थितिकी संवेदी जोन के लिए प्रस्तावित क्षेत्र का विवरण **उपाबंध-V** के रूप में संलग्न है।

2. पारिस्थितिकी संवेदी जोन के लिए आंचलिक महायोजना– (1) राज्य सरकार, पारिस्थितिकी संवेदी जोन के प्रयोजनों के लिए राजपत्र में इस अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख से दो वर्ष की अवधि के भीतर, स्थानीय व्यक्तियों के परामर्श से और राज्य के सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदन के लिए इस अधिसूचना में दिए गए अनुबंधों का पालन करते हुए आंचलिक महायोजना तैयार करेगी और राज्य में सक्षम प्राधिकारी द्वारा सम्यक रुप से अनुमोदित किया जाएगा।

(2) राज्य सरकार द्वारा पारिस्थितिकी संवेदी जोन के लिए आचंलिक महायोजना ऐसी रीति से जो इस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट किए गए हैं, के अनुसार तथा सुसंगत केंद्रीय और राज्य विधियों के अनुरुप और केंद्रीय सरकार द्वारा जारी मार्गनिर्देशों, यदि कोई हों, द्वारा तैयार होगी ।

(3) आंचलिक महायोजना, उक्त योजना में पारिस्थितिकी और पर्यावरणीय बातों को समाकलित करने के लिए राज्य सरकार के निम्नलिखित विभागों के परामर्श से तैयार होगी-

(i) पर्यावरण;

(ii) वन और वन्यजीव;

(iii) कृषि;

(iv) राजस्व;

(v) शहरी विकास;

(vi) पर्यटन;

(vii) ग्रामीण विकास;

(viii) सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण;

(ix) नगरपालिका;

(x) पंचायती राज;

(xi) हिमाचल प्रदेश राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड; और

(xii) लोक निर्माण विभाग।

(4) आंचलिक महायोजना अनुमोदित विद्यमान भू-उपयोग, अवसंरचना और क्रियाकलापों पर कोई निर्बंधन अधिरोपित नहीं करेगी जब तक कि इस अधिसूचना में इस प्रकार विनिर्दिष्ट न हो और आचंलिक महायोजना सभी अवसंरचना और क्रियाकलापों में, जो अधिक दक्षता और पारिस्थितिकी अनुकूल हों, का संवर्धन करेगी ।

(5) आंचलिक महायोजना में अनाच्छादित क्षेत्रों के जीर्णोद्धार, विद्यमान जल निकायों के संरक्षण, आवाह क्षेत्रों के प्रबंधन, जल-संभरों के प्रबंधन, भूतल जल के प्रबंधन, मृदा और नमी संरक्षण, स्थानीय समुदायों की आवश्यकताओं तथा पारिस्थितिकी और पर्यावरण से संबंधित ऐसे अन्य पहलुओं, जिन पर ध्यान देना आवश्यक है, के लिए उपबंध होंगे ।

(6) आंचलिक महायोजना विद्यमान और प्रस्तावित भूमि उपयोग विशेषताओं के ब्यौरों से अनुसमर्थित मानचित्र के साथ सभी विद्यमान पूजा स्थलों, ग्रामों और नगरीय बस्तियों, वनों के प्रकार और किस्मों, कृषि क्षेत्रों, ऊपजाऊ भूमि, हरित क्षेत्र जैसे उद्यान और उसी प्रकार के स्थान, उद्यान कृषि क्षेत्र, फलोउद्यान, झीलों और अन्य जल निकायों का अभ्यांकन करेगी।

(7) आंचलिक महायोजना पारिस्थितिकी संवेदी जोन में विकास को विनियमित करने के लिए प्रकिया प्रदान करेगी और सारणी में सूचीबद्ध पैरा-4 में प्रतिषिद्ध और विनियमित क्रियाकलापों का अनुपालन करेगी और स्थानीय समुदायों की जीविका को सुरक्षित करने के लिए पारिस्थितिकी अनुकूल विकास को सुनिश्चित और उसकी अभिवृद्धि भी करेगी।

(8) आंचलिक महायोजना प्रादेशिक विकास योजना की सह विस्तारी होगी ।

IndiaCode

(9) राज्य सरकार द्वारा अनुमोदित आंचलिक महायोजना, मानीटरी समिति के लिए एक संदर्भ दस्तावेज होगी ताकि वह इस अधिसूचना के उपबंधों के अनुसार निगरानी के अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर सके।

3. **राज्य सरकार द्वारा किए जाने वाले उपाय.-** राज्य सरकार इस अधिसूचना के उपबंधों को प्रभावी करने के लिए निम्नलिखित उपाय करेगी, अर्थात्:-

(1) **भू-उपयोग.–** (क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में वनों, उद्यान कृषि क्षेत्रों, कृषि क्षेत्रों, मनोरंजन के प्रयोजनों के लिए चिन्हित किए गए पार्कों और खुले स्थानों का वाणिज्यिक या आवासीय या औद्योगिक संबद्ध विकास क्रियाकलापों के लिए उपयोग या संपरिवर्तन नहीं होगा:

परंतु पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर भाग (क) में विनिर्दिष्ट प्रयोजनों से भिन्न प्रयोजनों के लिए कृषि और अन्य भूमि का संपरिवर्तन मानीटरी समिति की सिफारिश पर और यथा लागू और क्षेत्रीय नगर योजना अधिनियम और केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार के अन्य नियमों तथा विनियमों के अधीन सक्षम प्राधिकारी के पूर्व अनुमोदन से, और इस अधिसूचना के उपबंधों द्वारा स्थानीय निवासियों की निम्नलिखित आवासीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अनुज्ञात किया जाएगा, जैसे-

(i) विद्यमान सड़कों को चौड़ा करना और उन्हें सुदृढ़ करना तथा नई सड़कों का संनिर्माण;

(ii) बुनियादी ढांचों और नागरिक सुविधाओं का संनिर्माण और नवीकरण;

(iii) प्रदूषण उत्पन्न न करने वाले लघु उद्योग;

(iv) कुटीर उद्योगों जिनके अंतर्गत ग्रामीण उद्योग भी हैं; सुविधाजनक भण्डार और स्थानीय सुविधाएं सहायक पारिस्थितिकी पर्यटन जिसके अन्तर्गत गृह वास सम्मिलित है; और

(v) पैरा 4 में दिए गए संवर्धित क्रियाकलाप:

परंतु यह और कि प्रादेशिक नगर योजना अधिनियम और राज्य सरकार के अन्य नियमों और विनियमों के अधीन सक्षम प्राधिकारी के पूर्व अनुमोदन और संविधान के अनुच्छेद 244 के उपबंधों या तत्समय प्रवृत्त विधि के उपबंधों के अनुपालन के बिना, जिसके अधीन अनुसूचित जनजाति और अन्य परंपरागत वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006 (2007 का 2) भी है, वाणिज्यिक या औद्योगिक विकास क्रियाकलापों के लिए जनजातीय भूमि का उपयोग अनुज्ञात नहीं होगा:

परंतु यह और भी कि पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर भू-अभिलेखों में उपसंजात कोई गलती, मानीटरी समिति के विचार प्राप्त करने के पश्चात् राज्य सरकार द्वारा प्रत्येक मामले में एक बार ठीक होगी और उक्त गलती के सुधार की सूचना केंद्रीय सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को दी जाएगी:

परंतु यह और भी कि गलती के सुधार में इस उप पैरा के अधीन यथा उपबंधित के सिवाय किसी भी दशा में भू-उपयोग का परिवर्तन सम्मिलित नहीं होगा;

(ख) वनीकरण तथा वास जीर्णोद्धार क्रियाकलापों सहित अनप्रयुक्त या अनुत्पादक कृषि क्षेत्रों में पुन: वनीकरण करने के प्रयास किए जाएंगे।

(2) **प्राकृतिक जल स्रोत.**- आचंलिक महायोजना में सभी प्राकृतिक झरनों के आवाह क्षेत्रों की पहचान की जाएगी और उनके संरक्षण और नवीकरण के लिए योजना सम्मिलित होगी और राज्य सरकार द्वारा ऐसे क्षेत्रों पर या उनके निकट विकास क्रियाकलाप प्रतिषिद्ध करने के बारे में जो ऐसे क्षेत्रों के लिए अहितकर हो ऐसी रीति से मार्गदर्शक सिद्धांत तैयार किए जाएंगे।

(3) **पर्यटन या पारिस्थितिकी पर्यटन.-** (क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर सभी नए पारिस्थितिकी पर्यटन क्रियाकलाप या विद्यमान पर्यटन क्रियाकलापों का विस्तार पर्यटन महायोजना के अनुसार पारिस्थितिकी संवेदी जोन के लिए होगा;

(ख) पारिस्थितिकी पर्यटन महायोजना राज्य पर्यटन विभाग द्वारा राज्य पर्यावरण और वन विभाग के परामर्श से तैयार होगी;

(ग) पर्यटन महायोजना आंचलिक महायोजना के एक घटक के रूप में होगी;

(घ) पर्यटन महायोजना पारिस्थितिकी संवेदी जोन की वहन क्षमता के आधार पर तैयार की जाएगी;

(ङ) पारिस्थितिकी पर्यटन संबंधी क्रियाकलाप निम्नानुसार विनियमित होंगे, अर्थात्:-

IndiaCode

(i) संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर के भीतर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन के विस्तार तक, इनमें जो भी निकट है, नये वाणिज्यिक होटल और रिजॉर्ट के सन्निर्माण अनुज्ञात नहीं होंगे:

परंतु, यह कि संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर की दूरी से परे पारिस्थितिकी संवेदी जोन के विस्तार तक होटलों और रिजॉर्ट का स्थापन केवल पूर्व परिभाषित और नामनिर्दिष्ट क्षेत्रों में पर्यटन महायोजना के अनुसार पारिस्थितिकी पर्यटन सुविधाओं के लिए ही अनुज्ञात होगा;

(ii) पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर सभी नए पर्यटन क्रियाकलापों या विद्यमान पर्यटन क्रियाकलापों का विस्तार केंद्रीय सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के मार्गदर्शक सिद्धांतों के द्वारा तथा राष्ट्रीय व्याघ्र संरक्षण प्राधिकरण, द्वारा जारी पारिस्थितिकी–पर्यटन, पारिस्थितिकी-शिक्षा और पारिस्थितिकी-विकास पर बल देते हुए (समय-समय पर यथा संशोधित) जारी मार्गदर्शक सिद्धांतों के अनुसार होगा;

(iii) आंचलिक महायोजना का अनुमोदन किए जाने तक, पर्यटन के लिए विकास और विद्यमान पर्यटन क्रियाकलापों के विस्तार को वास्तविक स्थल विनिर्दिष्ट संवीक्षा और मानीटरी समिति की सिफारिश पर आधारित संबंधित विनियामक प्राधिकरणों द्वारा अनुज्ञात किया जाएगा और पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर किसी नए होटल या रिसोर्ट या वाणिज्यिक स्थापना का संनिर्माण अनुज्ञात नहीं किया जायेगा ।

(4) **नैसर्गिक विरासत.-** पारिस्थितिकी संवेदी जोन में महत्वपूर्ण नैसर्गिक विरासत के सभी स्थलों जैसे जीन कोश आरक्षित क्षेत्र, शैल विरचनाएं, जल प्रपातों, झरनों, घाटी मार्गों, उपवनों, गुफाएं, स्थलों, भ्रमण, अश्वरोहण, प्रपातों आदि की पहचान की जाएगी और विरासत संरक्षण योजना आंचलिक महायोजना के भाग के रुप में परिरक्षण और संरक्षण के लिए तैयार की जाएगी ।

(5) **मानव निर्मित विरासत स्थल.-** पारिस्थितिकी संवेदी जोन में भवनों, संरचनाओं, शिल्प-तथ्य, ऐतिहासिक, स्थापत्य, सौंदर्यपूरक और सांस्कृतिक महत्व के क्षेत्रों की और उपक्षेत्रों पहचान और उनके संरक्षण के लिए विरासत योजना आंचलिक महायोजना के भाग के रुप में तैयार की जाएगी।

(6) **ध्वनि प्रदूषण**.- पर्यावरण अधिनियम के अधीन ध्वनि प्रदूषण (विनियमन और नियंत्रण) नियम, 2000 में नियत उपबंधों के अनुसार पारिस्थितिकी संवेदी जोन में ध्वनि प्रदूषण के नियंत्रण और निवारण का अनुपालन किया जाएगा।

(7) **वायु प्रदूषण.**- पारिस्थितिकी संवेदी जोन में, वायु प्रदूषण के निवारण और नियंत्रण का वायु (प्रदूषण निवारण और नियंत्रण) अधिनियम, 1981 (1981 का 14) और उसके अधीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के अनुसार अनुपालन किया जाएगा।

(8) **बहिस्राव का निस्सारण.**- पारिस्थितिकी संवेदी जोन में उपचारित बहिस्राव का निस्सारण, साधारण मानकों के उपबंधों के अनुसार पर्यावरण अधिनियम और उसके अधीन बनाए गए नियमों के अधीन आने वाले पर्यावरणीय प्रदूषण के निस्सारण के लिए साधारण मानकों या राज्य सरकार द्वारा नियत मानकों, जो भी अधिक कठोर हो, के उपबंधों के अनुसार होगा।

(9) **ठोस अपशिष्ट.-** ठोस अपशिष्ट का निपटान और प्रबंधन निम्नानुसार किया जाएगा:-

(क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में ठोस अपशिष्ट का निपटान और प्रबंधन भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की अधिसूचना सं. का.आ. 1357(अ), तारीख 8 अप्रैल, 2016 के द्वारा प्रकाशित ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा; अकार्बनिक पदार्थो का निपटान पारिस्थितिकी संवेदी जोन से बाहर चिन्हित किए गए स्थानों पर पर्यावरण-अनुकूल रीति से किया जाएगा;

(ख) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में मान्य प्रौद्योगिकियों का उपयोग करते हुए विद्यमान नियमों और विनियमों के अनुरूप ठोस अपशिष्ट का सुरक्षित और पर्यावरण-अनुकूल प्रबंधन अनुज्ञात किया जा सकेगा।

(10) **जैव चिकित्सा अपशिष्ट.**- जैव चिकित्सा अपशिष्ट का प्रबंधन निम्नानुसार किया जाएगा:-

(क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में जैव चिकित्सा अपशिष्ट का निपटान भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की अधिसूचना सं.सा.का.नि 343 (अ), तारीख 28 मार्च, 2016, के द्वारा प्रकाशित जैव चिकित्सा अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा;

(ख) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में मान्य प्रौद्योगिकियों का उपयोग करते हुए विद्यमान नियमों और विनियमों के अनुरूप जैव-चिकित्सा अपशिष्ट का सुरक्षित और पर्यावरण-अनुकूल प्रबंधन अनुज्ञात किया जा सकेगा।

(11) **प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन.-** पारिस्थितिकी संवेदी जोन में प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन का निपटान भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथासंशोधित अधिसूचना सं.सा.का.नि 340(अ), तारीख 18 मार्च, 2016 द्वारा प्रकाशित प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंध नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।

(12) **निर्माण और विध्वंस अपशिष्ट प्रबंधन.-** पारिस्थितिकी संवेदी जोन में संनिर्माण और विध्वंस अपशिष्ट प्रबंधन का निपटान भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथासंशोधित अधिसूचना सं.सां.का.नि 317(अ), तारीख 29 मार्च, 2016 द्वारा प्रकाशित संनिर्माण और विध्वंस प्रबंध नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा ।

(13) **ई–अपशिष्ट.-** पारिस्थितिकी संवेदी जोन में ई–अपशिष्ट प्रबंधन का निपटान भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथासंशोधित द्वारा प्रकाशित ई–अपशिष्ट प्रबंध नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।

(14) **यानीय यातायात.-** यातायात की यानीय गतिविधियां आवास के अनुकूल विनियमित होगी और इस संबंध में आंचलिक महायोजना में विशेष उपबंध सम्मिलित किए जाएंगे और आंचलिक महायोजना के तैयार होने और राज्य सरकार के सक्षम प्राधिकारी द्वारा अनुमोदित होने तक, मानीटरी समिति सुसंगत अधिनियमों और उसके अधीन बनाए गए नियमों और विनियमों के अनुसार यानीय क्रियाकलापों के अनुपालन को मानीटर करेगी।

(15) **यानीय प्रदूषण.-** लागू विधियों के अनुपालन में वाहन प्रदूषण का निवारण और नियंत्रण किया जाएगा और स्वच्छक ईंधन आदि के उपयोग के लिए प्रयास किए जाएंगे।

(16) **औद्योगिक ईकाइयां.-** (क) राजपत्र में इस अधिसूचना के प्रकाशन पर या उसके पश्चात् पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर कोई नए प्रदूषित उद्योगों की स्थापना की अनुज्ञा नहीं दी जाएगी;

(ख) केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा फरवरी, 2016 में जारी समय-समय पर यथा संशोधित मार्गदर्शक सिद्धान्तों में उद्योगों के वर्गीकरण के अनुसार, जब तक कि अधिसूचना में इस प्रकार विनिर्दिष्ट न हो, पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर केवल गैर-प्रदूषणकारी उद्योगों को अनुज्ञात किया जाएगा और इसके अतिरिक्त, गैर प्रदूषणकारी उद्योगों को बढ़ावा दिया जाएगा।

(17) **पहाड़ी ढलानों को संरक्षण.-** पहाड़ी ढलानों का संरक्षण निम्नानुसार होगा:-

(क) आंचलिक महायोजना पहाड़ी ढलानों पर क्षेत्रों का संकेत होगा जहां किसी भी संनिर्माण की अनुज्ञा नहीं दी जाएगी;

(ख) कटाव के एक उच्च डिग्री के साथ विद्यमान खड़ी पहाड़ी ढलानों या ढलानों पर किसी भी संनिर्माण की अनुज्ञा नहीं दी जाएगी।

4. पारिस्थितिकी संवेदी जोन में प्रतिषिद्ध और विनियमित किए जाने वाले क्रियाकलापों की सूची.- पारिस्थितिकी संवेदी जोन में सभी क्रियाकलाप पर्यावरण अधिनियम के उपबंधों और उसके अधीन बनाए गए नियमों जिसके अन्तर्गत तटीय विनियमन जोन, 2011 और पर्यावरणीय समाघात निर्धारण अधिसूचना, 2006 और अन्य लागू विधियों के जिसमें वन (संरक्षण) अधिनियम, 1980 (1980 का 69), भारतीय वन अधिनियम, 1927 (1927 का 16), वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 (1972 का 53) सम्मिलित हैं और किये गये संशोधनों द्वारा शासित होंगे और नीचे दी गई सारणी में विनिर्दिष्ट रीति में विनियमित होंगे, अर्थात् :-

सारणी

क्रम सं.	क्रियाकलाप	वर्णन
	क. प्रतिषिद्ध क्रियाकलाप	
1.	वाणिज्यिक खनन, पत्थर उत्खनन और अपघर्षण इकाइयां ।	(क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर वास्तविक स्थानीय निवासियों की घरेलू आवश्यकताओं जिसमें मकानों के संनिर्माण या मरम्मत के लिए धरती को खोदना सम्मिलित है, के सिवाय सभी प्रकार के नए और विद्यमान खनन (लघु और वृहत खनिज), पत्थर उत्खनन और अपघर्षण इकाइयां तत्काल प्रभाव से प्रतिषिद्ध होंगी;

क्रम सं.	क्रियाकलाप	वर्णन
		(ख) खनन प्रचालन, 1995 की रिट याचिका (सिविल) सं. 202 में टी.एन. गौडाबर्मन थिरुमूलपाद बनाम भारत संघ के मामले में माननीय उच्चतम न्यायालय के आदेश तारीख 4 अगस्त, 2006 और 2012 की रिट याचिका (सिविल) सं. 435 में गोवा फाउंडेशन बनाम भारत संघ के मामले में तारीख 21 अप्रैल, 2014 के आदेश के अनुसरण में होगा ।
2.	प्रदूषण (जल, वायु, मृदा, ध्वनि, आदि) उत्पन करने वाले उद्योगों की स्थापना।	पारिस्थितिकी संवेदी जोन में कोई नया उद्योग लगाने और वर्तमान प्रदूषणकारी उद्योगों का विस्तार करने की अनुज्ञा नहीं होगी: परन्तु, केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा फरवरी, 2016 में जारी समय-समय पर यथा संशोधित मार्गदर्शक सिद्धान्तों में उद्योगों के वर्गीकरण के अनुसार, जब तक कि अधिसूचना में ऐसा विनिर्दिष्ट न हों, पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर गैर-प्रदूषणकारी उद्योगों को अनुज्ञात किया जाएगा और इसके अतिरिक्त गैर-प्रदूषणकारी कुटीर उद्यागों को बढ़ावा दिया जाएगा।
3.	बृहत जल विद्युत परियोजना की स्थापना ।	प्रतिषिद्ध।
4.	किसी परिसंकटमय पदार्थ का उपयोग या उत्पादन या प्रसंस्करण।	प्रतिषिद्ध।
5.	प्राकृतिक जल निकायों या क्षेत्र भूमि में अनुपचारित बहिर्स्राव का निस्सरण ।	प्रतिषिद्ध।
6.	नई आरा मिलों की स्थापना।	पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर नई आरा मिलों की स्थापना और विद्यमान आरा मिलों का विस्तार अनुज्ञात नहीं होगा।
7.	ईंट भट्टों की स्थापना करना।	प्रतिषिद्ध।
8.	पोलिथीन बैगों का उपयोग।	प्रतिषिद्ध।
9.	जलावन लकड़ी का वाणिज्यिक उपयोग।	प्रतिषिद्ध।
आ. विनियमित क्रियाकलाप		
10.	वाणिज्यिक होटलों और रिसोर्टों की स्थापना।	पारिस्थितिकी पर्यटन क्रियाकलापों लघु अस्थायी संरचनाओं के सिवाय संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर के भीतर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन के विस्तार तक, इनमें जो भी निकट है, नए वाणिज्यिक होटल और रिसोर्टों को अनुज्ञात नहीं किया जाएगा: परंतु, यह कि संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर के परे या पारिस्थितिकी संवेदी जोन के विस्तार तक इनमें से, जो भी निकट हो सभी नए पर्यटन क्रियाकलाप या विद्यमान क्रियाकलाप का विस्तार पर्यटन महायोजना और यथा लागू मार्गदर्शी सिद्धांतों के अनुरुप होगा।
11.	संनिर्माण क्रियाकलाप।	(क) संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर के भीतर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन के विस्तार तक, इनमें जो भी निकट हो, किसी भी प्रकार के नये वाणिज्यिक संनिर्माण की अनुज्ञा नहीं होगी: परंतु यह कि स्थानीय लोगों को अपनी आवास सम्बन्धी निम्नलिखित आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, पैरा 3 के उप पैरा (1) में सूचीबद्ध क्रियाकलापों सहित अपने उपयोग के लिए, अपनी भूमि में भवन उप-विधियों के अनुसार, संनिर्माण करने की अनुज्ञा होगी: परंतु यह कि गैर–प्रदूषणकारी लघु उद्योगों से संबंधित संनिर्माण

IndiaCode

क्रम सं.	क्रियाकलाप	वर्णन
		क्रियाकलाप लागू नियमों और विनियमों, यदि कोई हों, के अनुसार सक्षम प्राधिकारी की पूर्व अनुमति से विनियमित किए जाएंगे और वे न्यूनतम होंगे। (ख) एक किलोमीटर क्षेत्र से परे ये आंचलिक महायोजना के अनुसार विनियमित होंगे।
12.	प्रदूषण उत्पन्न न करने वाले लघु उद्योग।	फरवरी, 2016 में केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा जारी उद्योगों में वर्गीकरण के अनुसार समय-समय पर यथा संशोधित गैर-प्रदूषणकारी उद्योग और अपरिसंकटमय में, लघु और सेवा उद्योग, कृषि, पुष्प कृषि, उद्यान कृषि या पारिस्थितिकी संवेदी जोन से देशी सामग्री से उत्पादों को उत्पन्न करने वाले कृषि आधारित उद्योग सक्षम प्राधिकारी द्वारा अनुज्ञात होंगे।
13.	वृक्षों की कटाई।	(क) राज्य सरकार में सक्षम प्राधिकारी की पूर्व अनुज्ञा के बिना वन, सरकारी या राजस्व या निजी भूमि पर या वनों में वृक्षों की कटाई नहीं होगी । (ख) वृक्षों की कटाई संबंधित केंद्रीय या राज्य अधिनियम या उसके अधीन बनाए गए नियमों के उपबंध के अनुसार विनियमित होगे ।
14.	वन उत्पादों या गैर काष्ठ वन उत्पादों का संग्रहण ।	लागू विधियों के अनुसार विनियमित होंगे ।
15.	विद्युत और संचार टावरों का परिनिर्माण और केबलों के बिछाए जाने और अन्य बुनियादी ढांचे।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होंगे। भूमिगत केबल बिछाने को बढ़ावा दिया जाएगा।
16.	नागरिक सुख सुविधाओं सहित अवसंरचनाएं ।	न्यूनीकरण उपायों को लागू विधियों, नियमों और विनियमनों और उपलब्ध मार्गदर्शक सिद्धांतों के अनुसार किया जाना ।
17.	विद्यमान सड़कों को चौड़ा करना और उन्हें सुदृढ़ करना तथा नवीन सड़कों का संनिर्माण ।	न्यूनीकरण उपायों को लागू विधियों, नियमों और विनियमनों तथा उपलब्ध मार्गदर्शक सिद्धांतों के अनुसार किया जाएगा ।
18.	पर्यटन से संबंधित अन्य क्रियाकलाप जैसे गर्म वायु गुब्बारें, हेलीकॉप्टर, ड्रोन, माइक्रोलाइटस, आदि द्वारा पारिस्थितिकी संवेदी जोन क्षेत्र के ऊपर से उड़ना जैसे क्रियाकलाप करना।	लागू विधियों के अनुसार विनियमित होंगे ।
19.	पहाड़ी ढालों और नदी तटों का संरक्षण ।	लागू विधियों के अनुसार विनियमित होंगे ।
20.	रात्रि में यानिक यातायात का संचलन ।	लागू विधियों के अधीन वाणिज्यिक प्रयोजन के लिए विनियमित होंगे ।
21.	स्थानीय समुदायों द्वारा चल रही कृषि और बागवानी प्रथाओं के साथ दुग्धशाला, दुग्ध उद्योग, कृषि और मछली पालन ।	स्थानीय लोगों के उपयोग के लिए लागू विधियों के अधीन अनुज्ञात होंगे ।
22.	प्राकृतिक जल निकायों या सतही क्षेत्र में उपचारित बहिर्स्राव का निस्तारण ।	जल निकायों में उपचारित अपशिष्ट जल या बहिर्स्राव के निस्सारण से बचा जाएगा और उपचारित अपशिष्ट जल के पुन:चक्रण और पुन:उपयोग के लिए प्रयास किए जाएंगे। अन्यथा लागू विधियों के अनुसार उपचारित बहिर्स्राव के पुनर्चक्रण या प्रवाह के निर्वहन को विनियमित किया जाएगा।
23.	सतही और भूजल का वाणिज्यिक निष्कर्षण ।	लागू विधियों के अनुसार विनियमित होंगे ।
24.	फर्मों, निगम और कंपनियों द्वारा बड़े पैमाने पर वाणिज्यिक पशुओं और कुक्कुट फार्मों	स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए लागू विधियों के अधीन विनियमित होंगे ।

क्रम सं.	क्रियाकलाप	वर्णन
	की स्थापना ।	
25.	खुले कुंआ, बोर कुंआ, आदि कृषि और अन्य उपयोग के लिए ।	विनियमित और सम्बद्ध प्राधिकारी द्वारा क्रियाकलापों की सख्ती से मानीटरी की जाएगी।
26.	ठोस अपशिष्ट का प्रबन्धन।	लागू विधियों के अनुसार विनियमित होंगे ।
27.	विदेशी प्रजातियों का परिचय।	लागू विधियों के अनुसार विनियमित होंगे ।
28.	पारिस्थितिकी पर्यटन।	लागू विधियों के अनुसार विनियमित होंगे ।
29.	वाणिज्यिक सूचनापट्ट और होर्डिंग।	लागू विधियों के अनुसार विनियमित होंगे ।
	इ. संवर्धित क्रियाकलाप	
30.	वर्षा जल संचयन।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
31.	जैविक खेती।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
32.	सभी गतिविधियों के लिए हरित प्रौद्योगिकी को अंगीकृत करना ।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
33.	कुटीर उद्योगों जिसके अंतर्गत ग्रामीण कारीगर भी हैं।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
34.	नवीकरणीय ऊर्जा और ईंधन का उपयोग ।	बायोगैस, सौर प्रकाश, इत्यादि को बढ़ावा दिया जाएगा।
35.	कृषि वानिकी ।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
36.	बागान लगाना और जड़ी बूटियों का रोपण ।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
37.	पारिस्थितिकी अनुकूल परिवहन का उपयोग ।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
38.	कौशल विकास ।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
39.	निम्नीकृत भूमि / वन / वास की बहाली ।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
40.	पर्यावरणीय जागरुकता ।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।

5. पारिस्थितिकी संवेदी जोन अधिसूचना की मानीटरी के लिए मानीटरी समिति- केंद्रीय सरकार, पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 की धारा 3 की उपधारा (3) के अधीन इस अधिसूचना के उपबंधों की प्रभावी मानीटरी के लिए मानीटरी समिति का गठन करती है, जो निम्नलिखित से मिलकर बनेगी, अर्थात्:-

क्र.सं.	मानीटरी समिति का गठन	पद
1.	वन संरक्षक, मंडी	अध्यक्ष;
2.	राज्य सरकार द्वारा नामनिर्दिष्ट किए जाने वाले पर्यावरण के क्षेत्र में काम करने वाले गैर-सरकारी संगठन का एक प्रतिनिधि	सदस्य;
3.	राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के क्षेत्रीय कार्यकारी अभियंता	सदस्य;
4.	क्षेत्र के वरिष्ठ नगर नियोजक	सदस्य;
5.	पारिस्थितिकी और पर्यावरण में एक विशेषज्ञ राज्य सरकार द्वारा नामनिर्दिष्ट किया जाएगा	सदस्य;
6.	राज्य जैव विविधता बोर्ड के एक प्रतिनिधि को राज्य सरकार द्वारा नामनिर्दिष्ट किया जाएगा	सदस्य;
7.	प्रभागीय वनाधिकारी (वन्यजीव), कुल्लू	सदस्य;
8.	प्रभागीय वनाधिकारी, करसोग	सदस्य;
9.	प्रभागीय वनाधिकारी, नचन	सदस्य- सचिव

6. निर्देश निबंधन.- (1) मानीटरी समिति इस अधिसूचना के उपबंधों के अनुपालन को मानीटर करेगी।

IndiaCode

(2) मानीटरी समिति का कार्यकाल अगले आदेश होने तक किया जाएगा, परंतु यह कि समिति के गैर-सरकारी सदस्यों को समय-समय पर राज्य सरकार द्वारा नामनिर्दिष्ट किया जाएगा।

(3) उन क्रियाकलापों की, जो भारत सरकार के तत्कालीन पर्यावरण और वन मंत्रालय की अधिसूचना संख्यांक का.आ. 1533 (अ), तारीख 14 सितम्बर, 2006 की अनुसूची में सम्मिलित हैं, और जो पारिस्थितिकी संवेदी जोन में आते हैं, सिवाय इसके जो पैरा 4 के अधीन सारणी में यथा विनिर्दिष्ट प्रतिषिद्ध क्रियाकलापों के, मानीटरी समिति द्वारा वास्तविक विनिर्दिष्ट स्थलीय दशाओं के आधार पर संवीक्षा की जाएगी और उक्त अधिसूचना के उपबंधों के अधीन पूर्व पर्यावरण अनापत्ति के लिए केंद्रींय सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को निर्दिष्ट किया जाएगा।

(4) उन क्रियाकलापों की, जो भारत सरकार के तत्कालीन पर्यावरण और वन मंत्रालय की अधिसूचना संख्यांक का.आ. 1533 (अ) तारीख 14 सितंबर, 2006 की अनुसूची में सम्मिलित नहीं है, और जो पारिस्थितिकी संवेदी जोन में आते हैं, सिवाय इसके पैरा 4 के अधीन सारणी में यथाविर्निष्ट प्रतिषिद्ध क्रिलाकलापों के मानीटरी समिति द्वारा वास्तविक विनिर्दिष्ट स्थलीय दशाओं के आधार पर संवीक्षा की जाएगी और उसे संबद्ध विनियामक प्राधिकरणों को निर्दिष्ट किया जाएगा।

(5) मानीटरी समिति का सदस्य-सचिव या संबद्ध उपायुक्त ऐसे व्यक्ति के विरूद्ध, जो इस अधिसूचना के किसी उपबंध का उल्लंघन करता है, पर्यावरण अधिनियम की धारा 19 के अधीन परिवाद फाइल करने के लिए सक्षम होगा।

(6) मानीटरी समिति मुद्दा दर मुद्दा के आधार पर अपेक्षाओं पर निर्भर रहते हुए संबद्ध विभागों के प्रतिनिधियों या विशेषज्ञों, औद्योगिक संगमों या संबद्ध पणधारियों के प्रतिनिधियों को अपने विचार-विमर्श में सहायता के लिए आमंत्रित कर सकेगी ।

(7) मानीटरी समिति प्रत्येक वर्ष की 31 मार्च तक के अपने क्रियाकलापों की वार्षिक कार्रवाई रिपोर्ट राज्य के मुख्य वन्यजीव वार्डन को उपाबंध-VI में संलग्न प्रोफार्मा में उक्त वर्ष के 30 जून तक प्रस्तुत करेगी ।

(8) केन्द्रीय सरकार का पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय मानीटरी समिति को अपने कृत्यों के प्रभावी निर्वहन के लिए ऐसे निर्देश दे सकेगा, जो वह ठीक समझे ।

7. अतिरिक्त उपाय.- इस अधिसूचना के उपबंधों को प्रभावी बनाने के लिए केंद्रीय सरकार और राज्य सरकार, अतिरिक्त उपाय, यदि कोई हों, विनिर्दिष्ट कर सकेंगी।

8. उच्चतम न्यायालय, के आदेश आदि.- इस अधिसूचना के उपबंध भारत के माननीय उच्चतम न्यायालय या उच्च न्यायालय या राष्ट्रीय हरित अधिकरण द्वारा पारित किए गए या पारित किए जाने वाले आदेश, यदि कोई हो, के अध्यधीन होंगे।

[फा.सं. 25/179/2015-ईएसजेड-आरई]

डॉ. सतीश चन्द्र गढ़कोटी, वैज्ञानिक 'जी'

उपाबंध- I

हिमाचल प्रदेश राज्य में शिकारी देवी वन्यजीव अभयारण्य के पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा का विवरण

उत्तर: -

सीमा फलोत के निकट तुंगरास्री डी पी एफ की बाहरी सीमा से 450 मीटर की औसत चौड़ी पट्टी के साथ आरंभ होती है और दयोत पी एफ की सीमा को छूकर उत्तरी की ओर वन ट्रैक से जुड़ती है और इसके बाद राचर, खुलर, सुग्ला, मुराहल्ला और चैख ग्राम की सीमा के साथ ग्राम पथ को छूकर परिरेखा के साथ पूर्व की ओर जाती है। इसके बाद यह दैंत पी एफ की सीमा उत्तर की ओर मुड़ती है और यह दरोथा पी एफ की सीमाओं को छूकर पूर्व की ओर जाती है, इसके बाद ग्राम पथ को छूकर सीमा के साथ दक्षिण की ओर जाती है और इसके बाद जबल ग्राम की बाहरी सीमा के साथ नाला के साथ धारावत ग्राम के उत्तर की ओर मुड़ती है, चींदी, लम्ब ग्राम के उत्तर की ओर मुड़ती है, इसके बाद एस ओ आई बिंदु 2441 तक राकचल, फदेर ग्राम की सीमा के साथ दक्षिण की ओर जाती है और इसके बाद एस ओ आई बिंदु 2968 तक पश्चिम नाला से जुड़कर 2800 समोच्य रेखा जुड़कर पूर्व की ओर जाती है। पारिस्थितिकी संवेदी जोन के उत्तर भाग में डीपी एफ दयोत, दैंत, दरोथा, लम्ब, कालाकमेश्वर, शंकर गडौनशील है।

भू-निर्देशांक: अक्षांश 31^0 32' 1.425" देशांतर 77^0 9' 20.421"

IndiaCode

पूर्व: -

सीमा पश्चिम नाला से एस ओ आई बिंदु 2968 तक 600 मीटर की औसत चौड़ी पट्टी के साथ आरंभ होती है और इसके बाद जनोत ग्राम की सीमा के साथ एस ओ आई 2228 बिंदु के बाएं तक वन सीमा से जुड़कर रूहारा, कीयोलीनल ग्राम की सीमा के साथ जाती है। इसके बाद चारात पी एफ में बींज ग्राम में वन पथ से जुड़कर सौनत, चाडा, दलेहर, लीनगरनल, झागरन ग्राम की सीमा के साथ समोच्य रेखा के साथ जाती है जहां करसोग वन संभाग की सीमा आरंभ होती है। पारिस्थितिकी संवेदी जोन का यह पूर्वी भाग डी पी एफ कीयोलीनल, शोधाशील, रायगढ़ और रियाराशील और चाराती यू एफ से युक्त है।

भू-निर्देशांक: अक्षांश 31⁰ 29' 7.447" देशांतर 77⁰ 12' 29.653"

दक्षिण: -

सीमा बींज में करसोग वन संभाग की सीमा से 950 मीटर की औसत चौड़ी पट्टी के साथ आरंभ होती है और एस ओ आई 3124 बिंदु के दक्षिण की ओर समोच्य में मुड़कर, खुद डी पी एफ के पश्चिम की ओर मुड़ती है। पारिस्थितिकी संवेदी जोन के दक्षिणी भाग में चाराती यू एफ, चजवारा पी एफ, दियोकिधर पी एफ, डीपीएफ बीशलोन, दाराहल, दियोकिधर, कथियाला, सपरीनल, धारवार, दामेहरी, दारवारालशील और खुद है।

भू-निर्देशांक: अक्षांश 31⁰ 26' 40.802" देशांतर 77⁰ 11' 6.755"

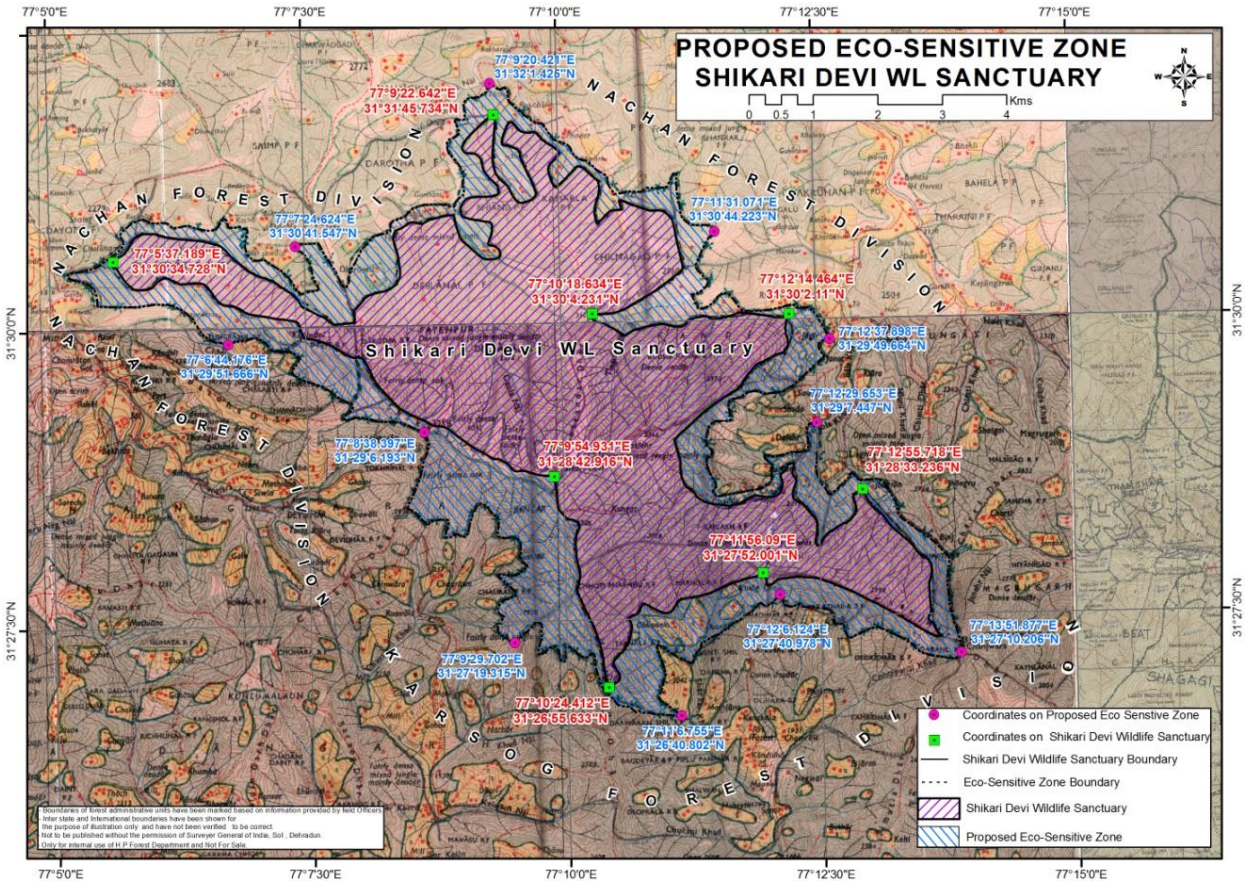
पश्चिम: -

सीमा खुद डी पी एफ से 900 मीटर की औसत चौड़ी पट्टी के साथ आरंभ होती है और एस ओ आई 2938 बिंदु जाती है जहां करसोग वन संभाग की सीमा का अंत है और फलोत में उत्तरी सीमा नचन वन संभाग से आरंभ होती है। पारिस्थितिकी संवेदी जोन के इस पश्चिमी भाग में फलोत में उत्तरी सीमा से जुड़कर डीपीएफ चुरास्त्री, यू एफ चुरास्त्री, डी पी एफ तोखारीनल चारागती, तुंगरस्त्री है।

भू-निर्देशांक: अक्षांश 31⁰ 29' 51.666" देशांतर 77⁰ 06' 44.176"

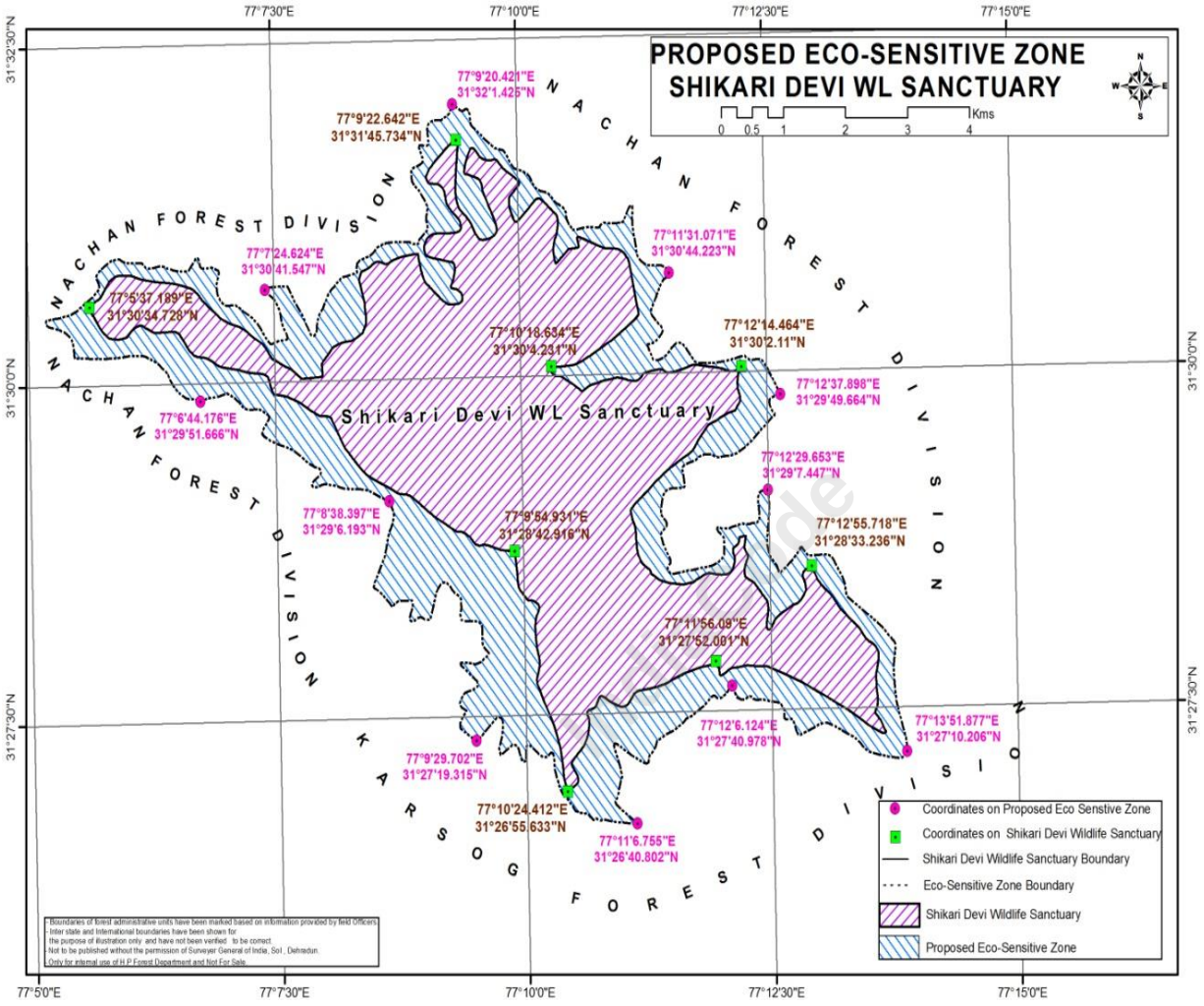
उपाबंध-IIक

मुख्य अवस्थानों के अक्षांश और देशांतर के साथ शिकारी देवी वन्यजीव अभयारण्य के चारों ओर पारिस्थितिकी संवेदी जोन का मानचित्र



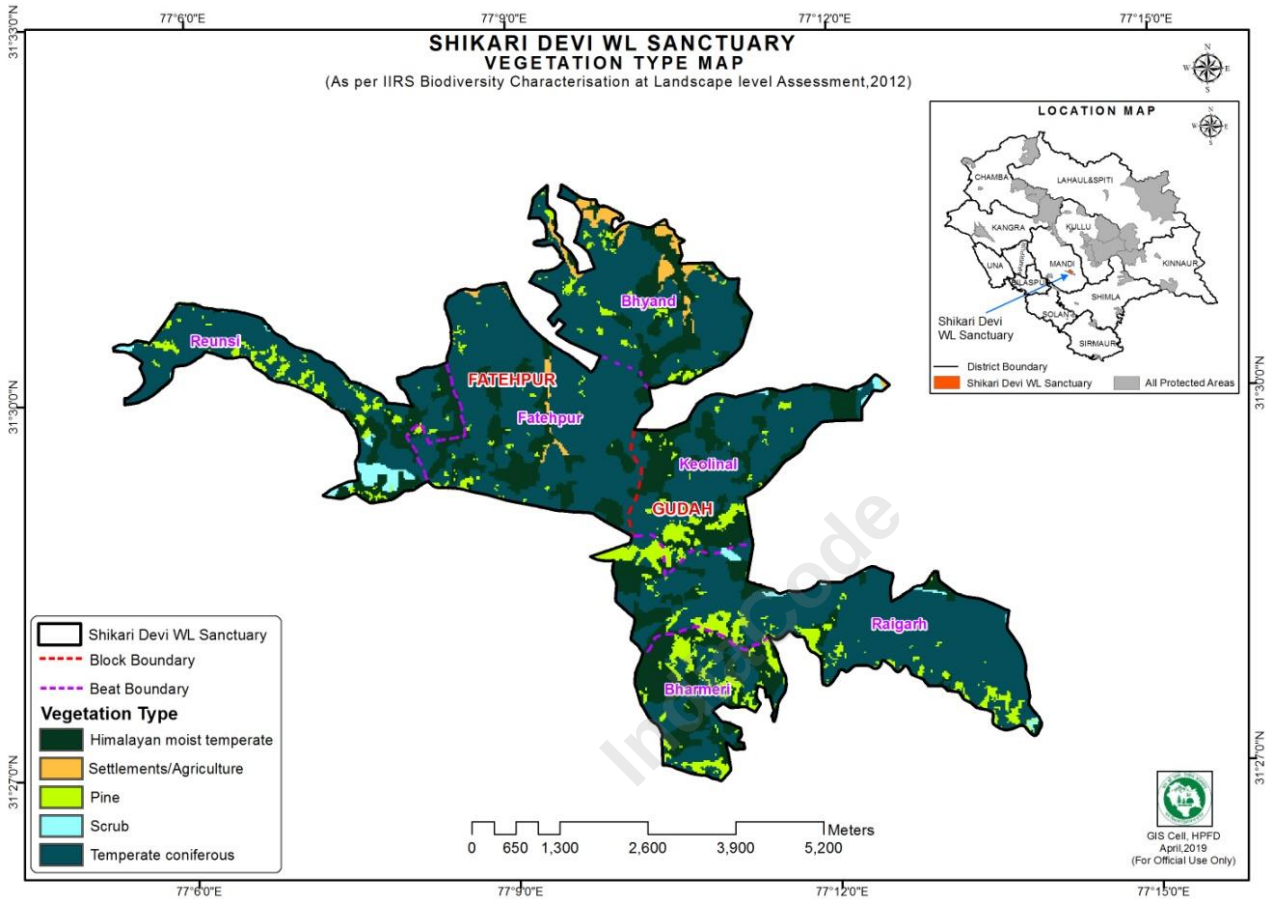
उपाबंध-IIख

मुख्य अवस्थानों के अक्षांश और देशांतर के साथ शिकारी देवी वन्यजीव अभयारण्य के चारों ओर पारिस्थितिकी संवेदी जोन का मानचित्र



उपाबंध-IIग

शिकारी देवी वन्यजीव अभयारण्य का वनस्पति प्रकार मानचित्र



उपाबंध-III

सारणी क: शिकारी देवी वन्यजीव अभयारण्य की सीमा के साथ भू-निर्देशांक

क्र. सं.	देशांतर	अक्षांश
1.	77⁰ 5’ 37.189” पू	31⁰ 30’ 34.728” उ
2.	77⁰ 9’ 54.931” पू	31⁰ 28’ 42.916” उ
3.	77⁰ 10’ 24.412” पू	31⁰ 26’ 55.633” उ
4.	77⁰ 11’ 56.09” पू	31⁰ 27’52.001” उ
5.	77⁰ 12’ 55.718” पू	31⁰ 28’ 33.236” उ
6.	77⁰ 12’ 14.464” पू	31⁰ 30’ 2.11” उ
7.	77⁰ 10’ 18.634” पू	31⁰ 30’ 4.231” उ
8.	77⁰ 9’ 22.642” पू	31⁰ 31’ 45.734” उ

सारणी ख: पारिस्थितिकी संवेदी जोन के मुख्य अवस्थानों के भू-निर्देशांक

	देशांतर	अक्षांश	विवरण (सीमा-चिन्ह)
उत्तर	77⁰07’24.624” 77⁰09’20.421” 77⁰11’31.071”	31⁰30’40.547” 31⁰32’01.425” 31⁰30’44.223”	डी पी एफ दयोत, दैंत, दरोथा, लम्ब, कालाकमेश्वर, शंकर, गडौन्शील

दक्षिण	77°13'51.877" 77°12'06.124" 77°11'06.755"	31°27'10.206" 31°27'40.978" 31°26'40.802"	चाराती यू एफ, चजवारा पी एफ, दियोकीधर पी एफ डी पी एफ बीशलोन, दाराहल, दियोकीधर, कथीयल, सपरीनल, धारवर, दामेहरी, दरावाराहलशील और खुद
पूर्व	77°12'37.898" 77°12'29.653"	31°29'49.664" 31°29'07.447"	डी पी एफ कियोलीनल, शोधाशील, रायगढ़ और रियाराशील्ल और चरती यू एफ
पश्चिम	77°08'38.397" 77°06'44.176" 77°05'10.55"	31°29'06.193" 31°29'51.666" 31°30'29.043"	फलोत में उत्तरी सीमा डी पी एफ चुरास्त्री, यू एफ चुरास्त्री, डी पी एफ तोखारीनल, चारागती, तुंगरास्त्री से जुड़ती है

उपाबंध –IV

भू-निर्देशांको के साथ शिकारी देवी वन्यजीव अभयारण्य के पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत आने वाले ग्रामों की सूची

संभाग	क्र.सं.	ग्राम नाम	अक्षांश	देशांतर
करसोग	1	मोराहाल्ला	31° 27' 35.1"उ	77° 11'37.9"पू
	2	चुरासानी	31°27'07.5"उ	77°11'08.5"पू
	3	दादवार	31°27'35"उ	77°11'37.9"पू
	4	नासरार	31° 27' 52.7"उ	77° 11' 42.4"पू
नचन	1	खालोउनी	31°29.925'उ	077°07.368'पू
	2	सोधा धार	31°30.253'उ	077°06.583'पू
	3	तुंगराशाह	31°30.342'उ	077°6.259'पू
	4	कोहाधार	31°30.374'उ	077°06.148'पू
	5	उप्पेर थहरू	31°30.275'उ	077°05.958'पू
	6	लोवर थहरू	31°30.272'उ	077°05.887'पू
	7	उप्पेर रेयोसी	31°30.046'उ	077°05.387'पू
	8	लोवर रेयोसी	31°30.070'उ	077°05.329'पू
	9	धारावात	31°30.66.4'उ	077°07.93.8'पू
	10	लोवर धारवात	31°30.70.4'उ	077°08.28'पू
	11	गुरारा	31°31.0.86'उ	077°08.94.0'पू
	12	जामली	31°31.0.92'उ	077°08.94.0'पू
	13	जरयाद	31°31.10.5'उ	077°09.11.4'पू
	14	दींगाली	31°31.11.4'उ	077°09.0.13'पू
	15	जवाल	31°31.27.5'उ	077°08.9.19'पू
	16	नरोत	31°31.41.4'उ	077°09.11.5'पू
	17	बायनद	31°31.29.1'उ	077°09.28.7'पू
	18	शैल	31°31.16.9'उ	077°09.35.2'पू
	19	बांशिल	31°31.76.2'उ	077°09.18.5'पू

IndiaCode

	20	लम्ब	31°31.55.2'उ	077°09.3.01'पू
	21	उप्पेर पायला	31°31.56.8'उ	077°09.3.01'पू
	22	लोवेर पायला	31°31.62.0'उ	077°09.8.45'पू
	23	मुरहाला	31°31.76.6'उ	077°09.11.5'पू
	24	मुजारला	31°31.35.1'उ	077°10.11.7'पू
	25	उप्पेर जिम्धार	31°30.99.1'उ	077°10.4.14'पू
	26	लोवेर जिम्धार	31°30.98.5'उ	077°10.52.4'पू
	27	उप्पेर सउच	31°31.26.9'उ	077°09.53.3'पू
	28	लोवेर सउच	31°31.15.7'उ	077°09.66.5'पू
	29	उप्पेर बुंगाटु	31°30.68.1'उ	077°09.86.4'पू
	30	लोवेर बुंगाटु	31°30.72.5'उ	077°09.80.4'पू
	31	लिंग	31°30.20.4'उ	077°11.14.9'पू
	32	धालियारा दवार	31°30.35.8'उ	077°11.16.6'पू
	33	किलवा	31°29.38.3'उ	077°12.56.6'पू
	34	सिलह	31°29.41.2'उ	077°12.42.7'पू
	35	चैइरा	31°28.35.1'उ	077°11.57.0'पू
	36	बांसूर	31°28.43.5'उ	077°11.57.0'पू
	37	धालियार	31°28.58.9'उ	077°12.03.4'पू
	38	जानेहार दोघरी	31°28.17.4'उ	077°13.58.3'पू
	39	लेहारा दोघरी	31°30.33.0'उ	077°13.33.1'पू

उपाबंध- V

शिकारी देवी वन्यजीव अभयारण्य के चारों ओर पारिस्थितिकी संवेदी जोन के रूप में प्रस्तावित क्षेत्र का विवरण

संभाग	क्र.सं.	प्रकार	वन का नाम	कम्पार्टमेंट	क्षेत्र (वर्ग किलोमीटर)
करसोग	1	डीपीएफ	डी-261बीशलोन	भाग	0.135
	2		डी-206 दाराहल	भाग	0.350
	3		डी-205 देओकिधर	भाग	0.195
	4		डी-204 काथीअल	भाग	0.565
	5		डी-203 सपरिनल	भाग	0.0475
	6		डी- 198 धारवार	भाग	0.485
	7		डी-199 दामेहरी	भाग	0.0875
	8		डी-196 धारवारालशील	भाग	1.762
	9		डी-112 खुद	भाग	0.650

IndiaCode

	10		डी-111 चुरासनी	भाग	2.926
	11	यू एफ	यू एफ-72 चुरासनी	संपूर्ण	0.786
	12		यू एफ-134 चारती	भाग	0.235
				कुल योग	***8.2245***
नचन	1	डीपीएफ	डी-315 तोखरीनल	सी1,2ए,2बी,सी3(भाग)	0.25
	2		डी-311चरागती	सी1ए-1सी,सी2ए,2बी(भाग)	0.9625
	3		डी-310 तुंगरासनी	सी5(1,2,8ए8बी) भाग	1.45
	4		डी-406 दयोत	सी1ए,1बी,सी2ए,2बी (भाग)	0.095
	5		डी-309 दैंत	सी3,सी4,सी5ए,5बी (भाग)	1.2675
	6		डी-127 दारोथा	सी2-सी8 (भाग)	1.5825
	7		डी-181 लम्ब	भाग	0.225
	8		डी-255 कालाकामेश्वर	सी5,सी6 (भाग)	1.30
	9		डी-240 शंकर	सी1 (भाग)	0.3550
	10		डी-167 गदाउंशील	भाग	0.8325
	11		डी-165 केओलीनल	भाग	0.6175
	12		डी-163 सोदाशील	भाग	0.9375
	13		डी-161 रायगढ़	भाग	0.4825
	14		डी-160 रीअराशील	भाग	0.6225
				उप-योग	***10.98***
				कुल योग	**19.2045**

उपाबंध- VI

की गई कार्रवाई सम्बन्धी रिपोर्ट का रुपविधान:-

1. बैठकों की संख्या और तारीख।
2. बैठकों का कार्यवृत: (कृपया मुख्य उल्लेखनीय बिंदुओं का उल्लेख करें । बैठक के कार्यवृत्त को एक पृथक उपाबंध में संलग्न करें) ।
3. आंचलिक महायोजना की तैयारी की प्रास्थिति जिसके अधीन पर्यटन महायोजना भी है।
4. भू-अभिलेख में सदृश्य त्रुटियों के सुधार के लिए ब्यौहार किए गए मामलों का सार (पारिस्थितिकी संवेदी जोन वार) । ब्यौरे उपाबंध के रूप में संलग्न किए जाएं।
5. पर्यावरण समाघात निर्धारण अधिसूचना, 2006 के अधीन आने वाले क्रियाकलापों की संवीक्षा के मामलों का सार। (ब्यौरे एक पृथक् उपाबंध के रूप में संलग्न किए जाएं)।

IndiaCode

6. पर्यावरण समाघात निर्धारण अधिसूचना, 2006 के अधीन न आने वाले क्रियाकलापों की संवीक्षा के मामलों का सार । (ब्यौरे एक पृथक् उपाबंध के रूप में संलग्न किए जाएं)।

7. पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 की धारा 19 के अधीन दर्ज की गई शिकायतों का सार ।

8. कोई अन्य महत्वपूर्ण विषय ।

MINISTRY OF ENVIRONMENT, FOREST AND CLIMATE CHANGE

NOTIFICATION

New Delhi, the 5th January, 2022

S.O. 41(E).—WHEREAS, a draft notification was published in the Gazette of India, Extraordinary, *vide* notification of the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change number S.O. 123(E), dated the 12th January, 2021, inviting objections and suggestions from all persons likely to be affected thereby within the period of sixty days from the date on which copies of the Gazette containing the said notification were made available to the public;

AND WHEREAS, copies of the Gazette containing the said draft notification were made available to the public on the 13th January, 2021;

AND WHEREAS, no objections and suggestions were received from persons and stakeholders in response to the aforesaid draft notification;

AND WHEREAS, the Shikari Devi Wildlife Sanctuary is spread over an area of 29.94 square kilometres and is situated at 103 kilometres from Shimla on Karsog side and 15 kilometers from Janjehli side with headquarter at Karsog in District Mandi in the State of Himachal Pradesh.

AND WHEREAS, the Shikari Devi Wildlife Sanctuary was given the status of Wildlife Sanctuary with effect from the 7th June, 2013 *vide* notification no. FFE- B-F(6)-11/2005-II/ Shikari. The Wildlife Sanctuary provides home to a variety of endemic flora and fauna and also has several important values from ecological, faunal, floral, geomorphologic and recreational and research/educational perspective;

AND WHEREAS, the Shikari Devi Wildlife Sanctuary consists of upper chir pine forest, moist deodar forest, western mixed coniferous forests, khrashu oak forest, ban oak forest. The major vegetation found in and around Shikari Devi Wildlife Sanctuary are deodar (*Cedrus deodara*), fir (*Abies pindrow*), spruce (*Picea smithiana*), kail (*Pinus wallichiana*), ban (*Quercus leucotrichophora*), kharsu (*Quercus semecarpifolia*), prunus (*Prunus spp*), acer (*Acer pictum*), juglans (*Juglans regia*), buxus (*Buxus wallichiana*), rhododendron (*Rhododendron arboretum*), celtis (*Celtis australis*), betula (*Betula utilis*), alnus (*Alnus nitida*), aesculus (*Aesculus indica*);

AND WHEREAS, the major faunal species found in the sanctuary are common leopard *(Panthera pardus)*, barking deer (*Muntiacus muntjak*), black bear (*Selenarctos thibetanus*), goral (*Naemorhedus goral*), Himalayan monal (*Lophophorus impejanus*), jackal, fox, mongoose, Himalayan yellow throated marten *(Martes flavigula)*, Himalayan palm civet (*Pagoma larvata)*, flying squirrel (*Petaurista petaurista*), leopard cat (*Prionailurus bengalensis*), jungle cat (*Felis chaus*), monkey (*Macaca mulatta*), langoor (*Presbytis entellus*), monitor lizard (*Varanus* spp.) etc;

AND WHEREAS, the area is recognised as an important bird area for presence of an endemic and vulnerable, Himalayan pheasant *(Lophophorus impejanus*), restricted to Himalayan region. Other significant avifaunal species includes chukor (*Alectoris chukar*), Koklash pheasant (*Pucrasia macrolopha*), Kalij pheasant (*Lophura leucomelanos)*, grey partridge (*Perdix perdix*), black patridge, Himalayan griffon, Himalayan woodpecker, etc;

AND WHEREAS, the Shikari Devi Wildlife Sanctuary and its Eco-sensitive Zone supports a number of medicinal plants including patish (*Acontinum spp*.), shingli mingli (*Dioscorea deltoidea*), Guchhi (*Morchella esculanta)*, Banaksha (*Viola spp)*, Salam-Panja *(Orchis latifolia)*;

AND WHEREAS, the Shikari Devi Wildlife Sanctuary and its Eco-sensitive Zone act as a buffer zone for many rare and endangered species. The area acts as an upper catchment to Satluj and Beas River and the steep slopes are prone to soil erosion;

AND WHEREAS, it is necessary to conserve and protect the area, the extent and boundaries of Shikari Devi Wildlife Sanctuary which are specified in paragraph 1 as Eco-sensitive Zone from ecological, environmental and biodiversity point of view and to prohibit industries or class of industries and their operations and processes in the said Eco-sensitive Zone;

NOW, THEREFORE, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) and clauses (v) and (xiv) of sub-section (2) and sub-section (3) of section 3 of the Environment (Protection) Act, 1986 (29 of 1986) (hereafter in this notification referred to as the Environment Act), read with sub-rule (3) of rule 5 of the Environment (Protection) Rules, 1986, the Central Government hereby notifies an area to an extent varying from 50 meters to 2 kilometres around the boundary of Shikari Devi Wildlife Sanctuary, in Mandi District in the State of Himachal Pradesh as the Shikari Devi Wildlife Sanctuary Eco-sensitive Zone (hereafter in this notification referred to as the Eco-sensitive Zone) details of which are as under, namely:-

1. Extent and boundaries of Eco-sensitive Zone. – (1) The Eco-sensitive Zone shall be of 19.2045 square kilometres with an extent of 50 meters to 2 kilometres around the boundary of Shikari Devi Wildlife Sanctuary.

(2) The boundary description of Shikari Devi Wildlife Sanctuary and its Eco-sensitive Zone is appended in **Annexure-I.**

(3) The maps of the Shikari Devi Wildlife Sanctuary demarcating Eco-sensitive Zone along with boundary details and latitudes and longitudes are appended as **Annexure-IIA, Annexure-IIB and Annexure-IIC.**

(4) Lists of geo co-ordinates of the boundary of Shikari Devi Wildlife Sanctuary and Eco-sensitive Zone are given in Table **A** and Table **B** of **Annexure-III.**

(5) The list of villages falling in the Eco-sensitive Zone along with their geo co-ordinates at prominent points is appended as **Annexure-IV.**

(6) The description of area proposed for Eco-sensitive Zone is appended as **Annexure-V.**

2. Zonal Master Plan for Eco-sensitive Zone.- (1) The State Government shall, for the purposes of the Eco-sensitive Zone prepare a Zonal Master Plan within a period of two years from the date of publication of this notification in the Official Gazette, in consultation with local people and adhering to the stipulations given in this notification and get it duly approved by the competent authority in the State.

(2) The Zonal Master Plan for the Eco-sensitive Zone shall be prepared by the State Government in such manner as is specified in this notification and also in consonance with the relevant Central and State laws and the guidelines issued by the Central Government, if any.

(3) The Zonal Master Plan shall be prepared in consultation with the following Departments of the State Government, for integrating the ecological and environmental considerations into the said plan:-

(i) Environment;

(ii) Forest and Wildlife;

(iii) Agriculture;

(iv) Revenue;

(v) Urban Development;

(vi) Tourism;

(vii) Rural Development;

(viii) Irrigation and Flood Control;

(ix) Municipal;

(x) Panchayati Raj;

(xi) Himachal Pradesh State Pollution Control Board; and

(xii) Public Works Department.

(4) The Zonal Master Plan shall not impose any restriction on the approved existing land use, infrastructure and activities, unless so specified in this notification and the Zonal Master Plan shall factor in improvement of all infrastructure and activities to be more efficient and eco-friendly.

(5) The Zonal Master Plan shall provide for restoration of denuded areas, conservation of existing water bodies, management of catchment areas, watershed management, groundwater management, soil and moisture conservation, needs of local community and such other aspects of the ecology and environment that need attention.

(6) The Zonal Master Plan shall demarcate all the existing worshipping places, villages and urban settlements, types and kinds of forests, agricultural areas, fertile lands, green area, such as, parks and like places, horticultural areas, orchards, lakes and other water bodies with supporting maps giving details of existing and proposed land use features.

(7) The Zonal Master Plan shall provide mechanism for regulating developmental activities in Eco-sensitive Zone and adhere to prohibited and regulated activities listed in the Table in paragraph 4 and also ensure and promote eco-friendly development for security of local communities' livelihood.

(8) The Zonal Master Plan shall be co-terminus with the Regional Development Plan.

(9) The Zonal Master Plan so approved by the State Government shall be the reference document for the Monitoring Committee for carrying out its functions of monitoring in accordance with the provisions of this notification.

3. Measures to be taken by the State Government.-The State Government shall take the following measures for giving effect to the provisions of this notification, namely:-

(1) Land use.– (a) Forests, horticulture areas, agricultural areas, parks and open spaces earmarked for recreational purposes in the Eco-sensitive Zone shall not be used or converted into areas for commercial or residential or industrial activities:

Provided that the conversion of agricultural and other lands, for the purposes other than that specified at part (a) above, within the Eco-sensitive Zone may be permitted on the recommendation of the Monitoring Committee, and with the prior approval of the competent authority under Regional Town Planning Act and other rules and regulations of Central Government or State Government as applicable and *vide* provisions of this notification, to meet the residential needs of the local residents and for activities, such as :-

(i) widening and strengthening of existing roads and construction of new roads;

(ii) construction and renovation of infrastructure and civic amenities;

(iii) small scale industries not causing pollution;

(iv) cottage industries including village industries; convenience stores and local amenities supporting eco-tourism including home stay; and

(v) promoted activities given in paragraph 4:

Provided further that no use of tribal land shall be permitted for commercial and industrial development activities without the prior approval of the competent authority under Regional Town Planning Act and other rules and regulations of the State Government and without compliance of the provisions of article 244 of the Constitution or the law for the time being in force, including the Scheduled Tribes and Other Traditional Forest Dwellers (Recognition of Forest Rights) Act, 2006 (2 of 2007):

Provided also that any error appearing in the land records within the Eco-sensitive Zone shall be corrected by the State Government, after obtaining the views of Monitoring Committee, once in each case and the correction of said error shall be intimated to the Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change:

Provided also that the correction of error shall not include change of land use in any case except as provided under this sub-paragraph.

(b) Efforts shall be made to reforest the unused or unproductive agricultural areas with afforestation and habitat restoration activities.

(2) Natural water bodies.-The catchment areas of all natural springs shall be identified and plans for their conservation and rejuvenation shall be incorporated in the Zonal Master Plan and the guidelines shall be drawn up by the State Government in such a manner as to prohibit development activities at or near these areas which are detrimental to such areas.

(3) Tourism or eco-tourism.- (a) All new eco-tourism activities or expansion of existing tourism activities within the Eco-sensitive Zone shall be as per the Tourism Master Plan for the Eco-sensitive Zone.

(b) The Tourism Master Plan shall be prepared by the State Department of Tourism in consultation with the State Departments of Environment and Forests.

(c) The Tourism Master Plan shall form a component of the Zonal Master Plan.

(d) The Tourism Master Plan shall be drawn based on the study of carrying capacity of the Eco-sensitive Zone.

(e) The activities of eco-tourism shall be regulated as under, namely:-

(i) new construction of hotels and resorts shall not be allowed within one kilometre from the boundary of the protected area or upto the extent of the Eco-sensitive Zone, whichever is nearer:

Provided that beyond the distance of one kilometre from the boundary of the protected area till the extent of the Eco-sensitive Zone, the establishment of new hotels and resorts shall be allowed only in pre-defined and designated areas for eco-tourism facilities as per Tourism Master Plan;

(ii) all new tourism activities or expansion of existing tourism activities within the Eco-sensitive Zone shall be in accordance with the guidelines issued by the Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change and the eco-tourism guidelines issued by the National Tiger Conservation Authority (as amended from time to time) with emphasis on eco-tourism, eco-education and eco-development;

(iii) until the Zonal Master Plan is approved, development for tourism and expansion of existing tourism activities shall be permitted by the concerned regulatory authorities based on the actual site specific scrutiny and recommendation of the Monitoring Committee and no new hotel, resort or commercial establishment construction shall be permitted within Eco-sensitive Zone area.

(4) Natural heritage.- All sites of valuable natural heritage in the Eco-sensitive Zone, such as the gene pool reserve areas, rock formations, waterfalls, springs, gorges, groves, caves, points, walks, rides, cliffs, etc. shall be identified and a heritage conservation plan shall be drawn up for their preservation and conservation as a part of the Zonal Master Plan.

(5) Man-made heritage sites.- Buildings, structures, artefacts, areas and precincts of historical, architectural, aesthetic, and cultural significance shall be identified in the Eco-sensitive Zone and heritage conservation plan for their conservation shall be prepared as part of the Zonal Master Plan.

(6) Noise pollution.- Prevention and control of noise pollution in the Eco-sensitive Zone shall be carried out in accordance with the provisions of the Noise Pollution (Regulation and Control) Rules, 2000 under the Environment Act.

(7) Air pollution.- Prevention and control of air pollution in the Eco-sensitive Zone shall be carried out in accordance with the provisions of the Air (Prevention and Control of Pollution) Act, 1981 (14 of 1981) and the rules made thereunder.

(8) Discharge of effluents.- Discharge of treated effluent in Eco-sensitive Zone shall be in accordance with the provisions of the General Standards for Discharge of Environmental Pollutants covered under the Environment Act and the rules made thereunder or standards stipulated by the State Government, whichever is more stringent.

(9) Solid wastes.-Disposal and Management of solid wastes shall be as under:-

(a) The solid waste disposal and management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out in accordance with the Solid Waste Management Rules, 2016, published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change *vide* notification number S.O. 1357 (E), dated the 8th April, 2016; the inorganic material may be disposed in an environmental acceptable manner at site identified outside the Eco-sensitive Zone;

(b) Safe and Environmentally Sound Management of Solid wastes in conformity with the existing rules and regulations using identified technologies may be allowed within Eco-sensitive Zone.

(10) Bio-Medical Waste.– Bio-Medical Waste Management shall be as under:-

(a) The Bio-Medical Waste disposal in the Eco-sensitive Zone shall be carried out in accordance with the Bio-Medical Waste Management Rules, 2016, published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change *vide* notification number G.S.R. 343 (E), dated the 28th March, 2016.

(b) Safe and Environmentally Sound Management of Bio-Medical Wastes in conformity with the existing rules and regulations using identified technologies may be allowed within the Eco-sensitive Zone.

(11) Plastic waste management.- The plastic waste management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out as per the provisions of the Plastic Waste Management Rules, 2016, published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change *vide* notification number G.S.R. 340(E), dated the 18th March, 2016, as amended from time to time**.**

(12) Construction and demolition waste management.- The construction and demolition waste management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out as per the provisions of the Construction and Demolition Waste Management Rules, 2016 published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change *vide* notification number G.S.R. 317(E), dated the 29th March, 2016, as amended from time to time.

(13) E-waste.- The e - waste management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out as per the provisions of the E-Waste Management Rules, 2016, published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change, as amended from time to time.

(14) Vehicular traffic.– The vehicular movement of traffic shall be regulated in a habitat friendly manner and specific provisions in this regard shall be incorporated in the Zonal Master Plan and till such time as the Zonal Master plan is prepared and approved by the competent authority in the State Government, the Monitoring Committee shall monitor compliance of vehicular movement under the relevant Acts and the rules and regulations made thereunder.

(15) Vehicular pollution.- Prevention and control of vehicular pollution shall be incompliance with applicable laws and efforts shall be made for use of cleaner fuels.

(16) Industrial units.– (a) On or after the publication of this notification in the Official Gazette, no new polluting industries shall be permitted to be set up within the Eco-sensitive Zone.

(b) Only non-polluting industries shall be allowed within Eco-sensitive Zone as per the classification of Industries in the guidelines issued by the Central Pollution Control Board in February, 2016, as amended from time to time, unless so specified in this notification, and in addition, the non-polluting cottage industries shall be promoted.

(17) Protection of hill slopes.- The protection of hill slopes shall be as under:-

(a) The Zonal Master Plan shall indicate areas on hill slopes where no construction shall be permitted.

(b) Construction shall not be permitted on existing steep hill slopes or slopes with a high degree of erosion.

4. List of activities prohibited or to be regulated within Eco-sensitive Zone.- All activities in the Eco-sensitive Zone shall be governed by the provisions of the Environment Act and the rules made thereunder including the Coastal Regulation Zone, 2011 and the Environmental Impact Assessment Notification, 2006 and other applicable laws including the Forest (Conservation) Act, 1980 (69 of 1980), the Indian Forest Act, 1927 (16 of 1927), the Wildlife (Protection) Act 1972, (53 of 1972), and amendments made thereto and be regulated in the manner specified in the Table below, namely:-

TABLE

S. No.	Activity	Description
	A. Prohibited Activities	
1.	Commercial mining, stone quarrying and crushing units.	(a) All new and existing mining (minor and major minerals), stone quarrying and crushing units shall be prohibited with immediate effect except for meeting the domestic needs of bona fide local residents including digging of earth for construction or repair of houses within Eco- sensitive Zone. (b) The mining operations shall be carried out in accordance with the order of the Hon'ble Supreme Court dated the 4th August, 2006 in the matter of T.N. Godavarman Thirumulpad Vs. UOI in W.P.(C) No.202 of 1995 and dated the 21st April, 2014 in the matter of Goa Foundation Vs. UOI in W.P.(C) No.435 of 2012.
2.	Setting of industries causing pollution (Water, Air, Soil, Noise, etc.).	New industries and expansion of existing polluting industries in the Eco-sensitive Zone shall not be permitted: Provided that, non-polluting industries shall be allowed within Eco-sensitive Zone as per classification of Industries in the guidelines issued by the Central Pollution Control Board in February, 2016, as amended from time to time, unless so specified in this notification and in addition, the non-polluting cottage industries shall be promoted.
3.	Establishment of major hydroelectric project.	Prohibited.
4.	Use or production or processing of any hazardous substance.	Prohibited.

5.	Discharge of untreated effluents in natural water bodies or land area.	Prohibited.
6.	Setting up of new saw mills.	New or expansion of existing saw mills shall not be permitted within the Eco-sensitive Zone.
7.	Setting up of brick kilns.	Prohibited.
8.	Use of polythene bags.	Prohibited.
9.	Commercial use of firewood.	Prohibited.
	B. Regulated Activities	
10.	Commercial establishment of hotels and resorts.	No new commercial hotels and resorts shall be permitted within one kilometer of the boundary of the Protected Area or upto the extent of Eco-sensitive zone, whichever is nearer, except for small temporary structures for Eco-tourism activities: Provided that, beyond one kilometer from the boundary of the protected Area or upto the extent of Eco-sensitive Zone whichever is nearer, all new tourist activities or expansion of existing activities shall be in conformity with the Tourism Master Plan and guidelines as applicable.
11.	Construction activities.	(a) New commercial construction of any kind shall not be permitted within one kilometer from the boundary of the Protected Area or up to extent of the Eco-sensitive Zone whichever is nearer: Provided that, local people shall be permitted to undertake construction in their land for their use including the activities listed in sub-paragraph (1) of paragraph 3 as per building bye-laws to meet the residential needs of the local residents: Provided that the construction activity related to small scale industries not causing pollution shall be regulated and kept at the minimum, with the prior permission from the competent authority as per applicable rules and regulations, if any. (b) Beyond one kilometer it shall be regulated as per the Zonal Master Plan.
12.	Small scale non-polluting industries.	Non-polluting industries as per classification of industries issued by the Central Pollution Control Board in February, 2016, as amended from time to time, and non-hazardous, small-scale and service industry, agriculture, floriculture, horticulture or agro-based industry producing products from indigenous materials from the Eco-sensitive Zone shall be permitted by the competent Authority.
13.	Felling of trees.	(a) There shall be no felling of trees in the forest or Government or revenue or private lands without prior permission of the competent authority in the State Government. (b) The felling of trees shall be regulated in accordance with the provisions of the concerned Central or State Act and the rules made thereunder.
14.	Collection of Forest Produce or Non-Timber Forest Produce.	Regulated under applicable laws.
15.	Erection of electrical and communication towers and laying	Regulated under applicable laws. Underground cabling may be promoted.

IndiaCode

	of cables and other infrastructures.	
16.	Infrastructure including civic amenities.	Taking measures of mitigation, as per applicable laws, rules and regulation and available guidelines.
17.	Widening and strengthening of existing roads and construction of new roads.	Taking measures of mitigation, as per applicable laws, rules and regulation and available guidelines.
18.	Undertaking other activities related to tourism like flying over the Eco-sensitive Zone area by hot air balloon, helicopter, drones, Microlites, etc.	Regulated as per the applicable laws.
19.	Protection of Hill Slopes and river banks.	Regulated as per the applicable laws.
20.	Movement of vehicular traffic at night.	Regulated for commercial purpose under applicable laws.
21.	Ongoing agriculture and horticulture practices by local communities along with dairies, dairy farming, aquaculture and fisheries.	Permitted as per the applicable laws for use of locals.
22.	Discharge of treated waste water or effluents in natural water bodies or land area.	The discharge of treated waste water or effluents shall be avoided to enter into the water bodies and efforts shall be made for recycle and reuse of treated waste water. Otherwise the discharge of treated waste water or effluent shall be regulated as per the applicable laws.
23.	Commercial extraction of surface and ground water.	Regulated under applicable laws.
24.	Establishment of large-scale commercial livestock and poultry farms by firms, corporate and companies.	Regulated as per applicable laws except for meeting local needs.
25.	Open Well, Bore Well, etc. for agriculture or other usage.	Regulated and the activity should be strictly monitored by the appropriate authority.
26.	Solid Waste Management.	Regulated as per the applicable laws.
27.	Introduction of Exotic species.	Regulated as per the applicable laws.
28.	Eco-tourism.	Regulated as per the applicable laws.
29.	Commercial Sign boards and hoardings.	Regulated as per the applicable laws.
C. Promoted Activities		
30.	Rain water harvesting.	Shall be actively promoted.
31.	Organic farming.	Shall be actively promoted.
32.	Adoption of green technology for all activities.	Shall be actively promoted.
33.	Cottage industries including	Shall be actively promoted.

IndiaCode

	village artisans, etc.	
34.	Use of renewable energy and fuels.	Bio-gas, solar light, etc. shall be actively promoted.
35.	Agro-Forestry.	Shall be actively promoted.
36.	Plantation of Horticulture and Herbals.	Shall be actively promoted.
37.	Use of eco-friendly transport.	Shall be actively promoted.
38.	Skill Development.	Shall be actively promoted.
39.	Restoration of Degraded Land/ Forests/ Habitat.	Shall be actively promoted.
40.	Environmental Awareness.	Shall be actively promoted.

5. Monitoring Committee for Monitoring the Eco-sensitive Zone Notification. -For effective monitoring of the provisions of this notification under sub-section (3) of section 3 of the Environment (Protection) Act, 1986, the Central Government hereby constitutes a Monitoring Committee, comprising of the following, namely: -

S.No.	Constituent of the Monitoring Committee	Designation
1.	Conservator of Forests, Mandi	Chairman;
2.	A representative of Non-governmental Organisation working in the field of environment to be nominated by the State Government	Member;
3.	Regional Executive Engineer of State Pollution Control Board	Member;
4.	Senior Town Planner of the area	Member;
5.	An expert in the area of Ecology and Environment to be nominated by the State Government	Member;
6.	One representative of State Biodiversity Board to be nominated by the State Government	Member;
7.	Divisional Forest Officer(Wildlife), Kullu	Member;
8.	Divisional Forest Officer, Karsog	Member;
9.	Divisional Forest Officer, Nachan	Member-Secretary.

IndiaCode

6. Terms of reference. – (1) The Monitoring Committee shall monitor the compliance of the provisions of this notification.

(2) The tenure of the Monitoring committee shall be till further orders, provided that the non-official members of the Committee shall be nominated by the State Government from time to time.

(3) The activities that are covered in the Schedule to the notification of the Government of India in the erstwhile Ministry of Environment and Forests number S.O. 1533 (E), dated the 14th September, 2006, and are falling in the Eco-sensitive Zone, except for the prohibited activities as specified in the Table under paragraph 4 thereof, shall be scrutinised by the Monitoring Committee based on the actual site-specific conditions and referred to the Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change for prior environmental clearances under the provisions of the said notification.

(4) The activities that are not covered in the Schedule to the notification of the Government of India in the erstwhile Ministry of Environment and Forests number S.O. 1533 (E), dated the 14th September, 2006 and are falling in the Eco-sensitive Zone, except for the prohibited activities as specified in the Table under paragraph 4 thereof, shall be scrutinised by the Monitoring Committee based on the actual site-specific conditions and referred to the concerned regulatory authorities.

(5) The Member-Secretary of the Monitoring Committee or the concerned Deputy Commissioner(s) shall be competent to file complaints under section 19 of the Environment Act, against any person who contravenes the provisions of this notification.

(6) The Monitoring Committee may invite representatives or experts from concerned Departments, representatives from industry associations or concerned stakeholders to assist in its deliberations depending on the requirements on issue to issue basis.

(7) The Monitoring Committee shall submit the annual action taken report of its activities as on the 31st March of every year by the 30th June of that year to the Chief Wildlife Warden in the State as per proforma appended at Annexure-VI.

(8) The Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change may give such directions, as it deems fit, to the Monitoring Committee for effective discharge of its functions.

7. Additional measures.- The Central Government and State Government may specify additional measures, if any, for giving effect to provisions of this notification.

8. Orders of Supreme Court, etc.- The provisions of this notification shall be subject to the orders, if any passed or to be passed by the Hon'ble Supreme Court of India or the High Court or the National Green Tribunal.

[F. No. 25/179/2015-ESZ-RE]

Dr. SATISH C. GARKOTI, Scientist 'G'

ANNEXURE- I

BOUNDARY DESCRIPTION OF SHIKARI DEVI WILDLIFE SANCTUARY ECO-SENSITIVE ZONE IN THE STATE OF HIMACHAL PRADESH

North: -

The boundary starts with average width of strip of 450 m from outer boundary of Tungrasni DPF near Phalot and joins forest track Northward touching boundary of Dayot PF and then Eastward along contour touching village path, along boundary of Rachar, Khular, Sugla, Murahalla and Chaikh Village. Then it moves northward up to boundary of Daint PF and along it Eastward touching boundaries of Darotha PF, then Southward along boundary touching village path and then moves Northward up to Dharawat Village along nalla along outer boundary of Jabal Village, turns Northward to Chindi, Lamb village, then Southward along boundary of Rakchal, Phader village up to SOI point 2441 and then Eastward to join 2800 contour line to join nalla West to SOI point 2968. This North part of Eco-sensitive Zone comprises DPF Dayot, Daint, Darotha, Lamb, Kalakameshwar, Shankar, Gadaunshill.

Geo-coordinates: Lat $31^0$32' 1.425" Long 77^0 9' 20.421"

East: -

The boundary starts with average width of strip of 600 m from nalla West to SOI point 2968 m and then along boundary of Ruhara, Keolinal village joins forest boundary upto left of SOI 2228 point along boundary of Janot village. Then along contour line along boundary of Saunt, Chada, Dalehr, Lingranal, Jhagran village to join forest path at village Binj in Charat PF where boundary of Karsog Forest Division starts. This Eastern part of Eco-sensitive Zone comprises DPF Keolinal, Shodhashill, Raigarh and Riaras hill and Charti UF.

Geo-coordinates: Lat $31^0$29' 7.447" Long 77^0 12' 29.653"

South: -

The boundary starts with average width of strip of 950 m from boundary of Karsog Forest Division at Binj and moves along contour southward to SOI 3124 point, turn Westward up to Khud DPF. This Sothern part of Eco-sensitive Zone comprises Charati UF, Chajwara PF, Deokidhar PF, DPF Bishlon, Darahal, Deokidhar, Kathiala, Saprinal, Dharwar, Damehri, Darwaralshil and Khud.

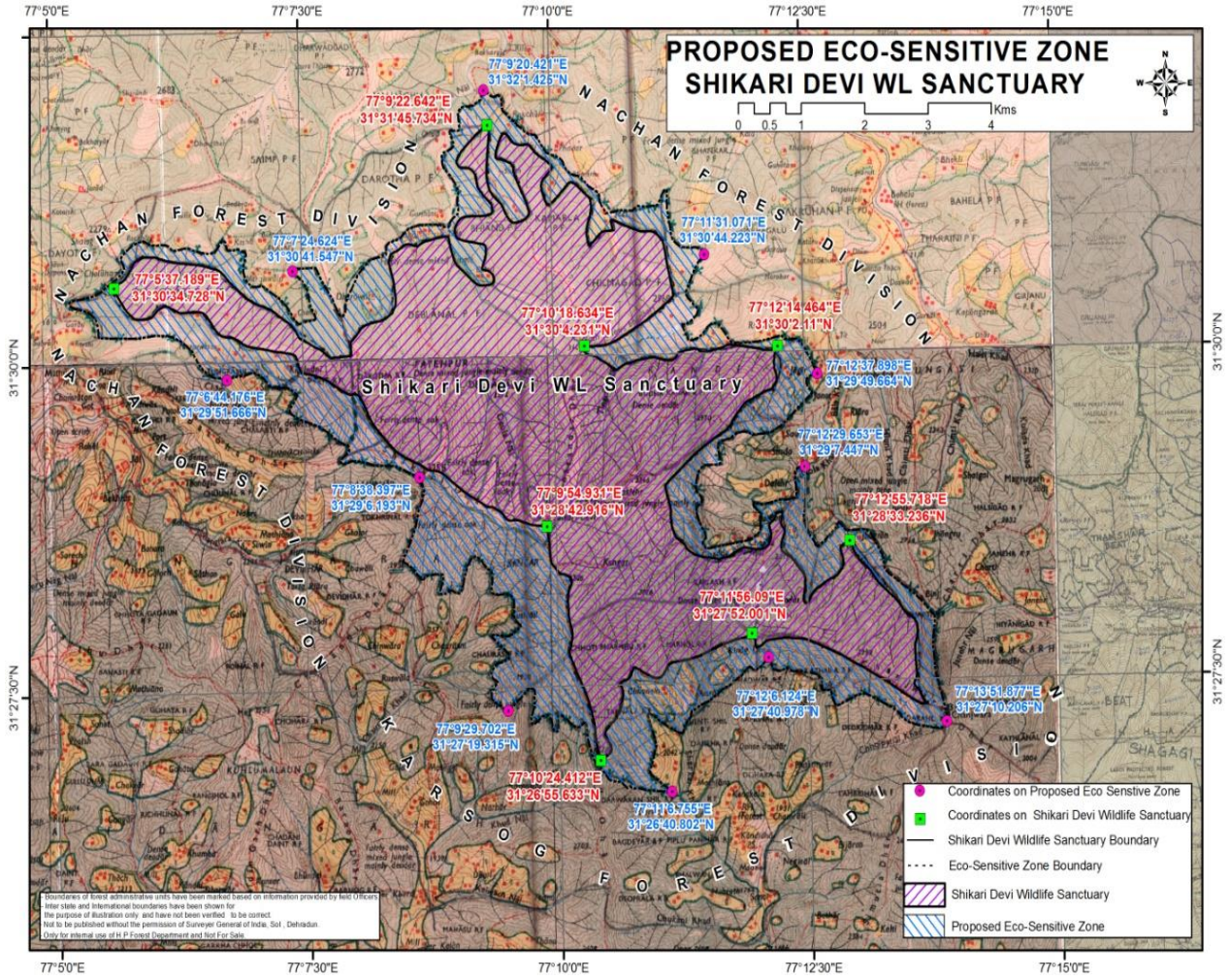
Geo-coordinates: Lat 31^0 26' 40.802" Long 77^0 11' 6.755"

West: -The boundary starts with average width of strip of 900 m from Khud DPF and goes upto SOI 2938 point where boundary of Karsog Forest Division ends and that of Nachan Forest Division starts up to Northern boundary at Phalot. This Western part of Eco-sensitive Zone comprises DPF Churasni, UF Churasni, DPF Tokharinal, Charagti, Tungrasni to join northern boundary at Phalot.

Geo-coordinates: Lat 31^0 29' 51.666" Long 77^0 06' 44.176"

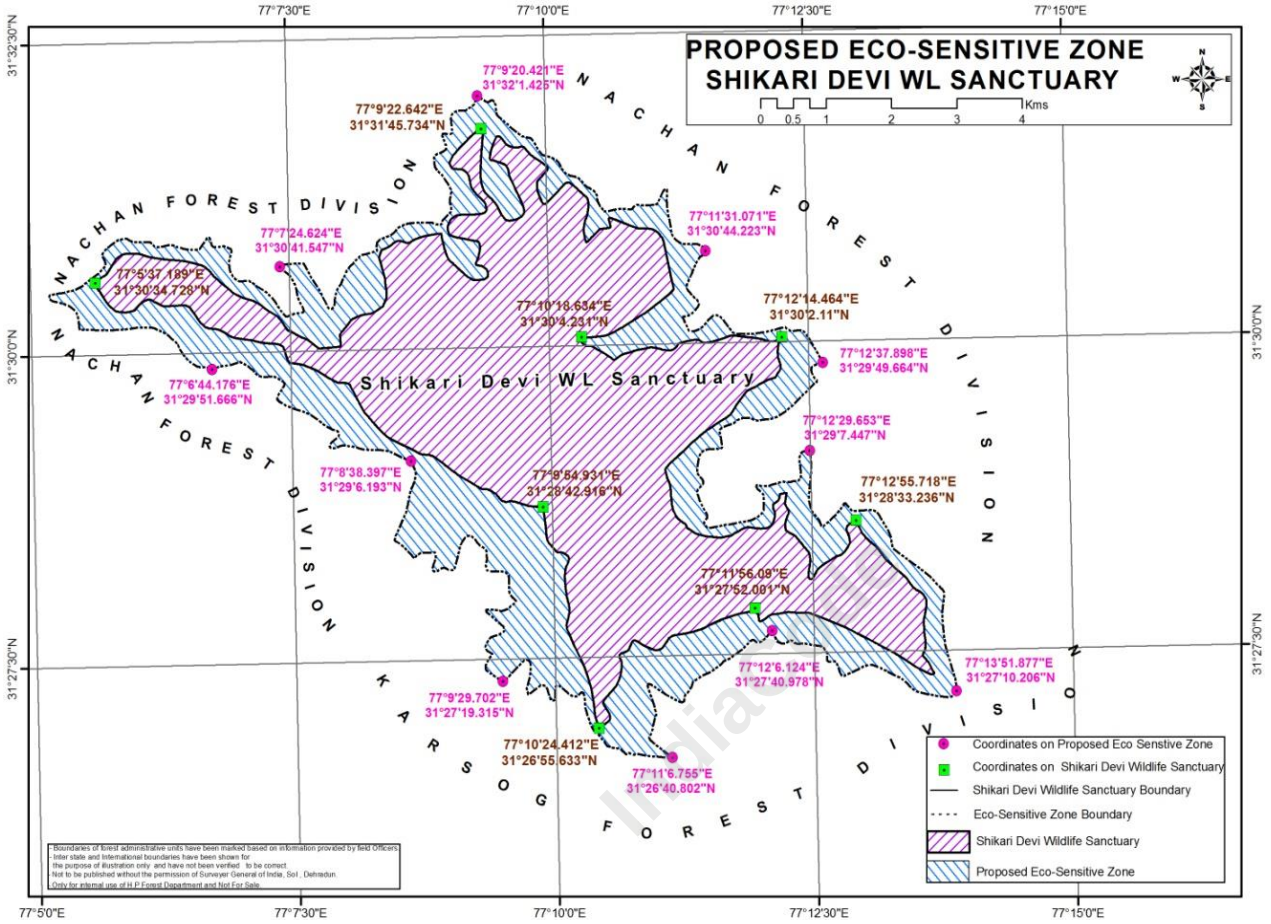
ANNEXURE- IIA

MAP OF ECO-SENSITIVE ZONE AROUND SHIKARI DEVI WILDLIFE SANCTUARY ALONG WITH LATITUDE AND LONGITUDE OF PROMINENT LOCATIONS



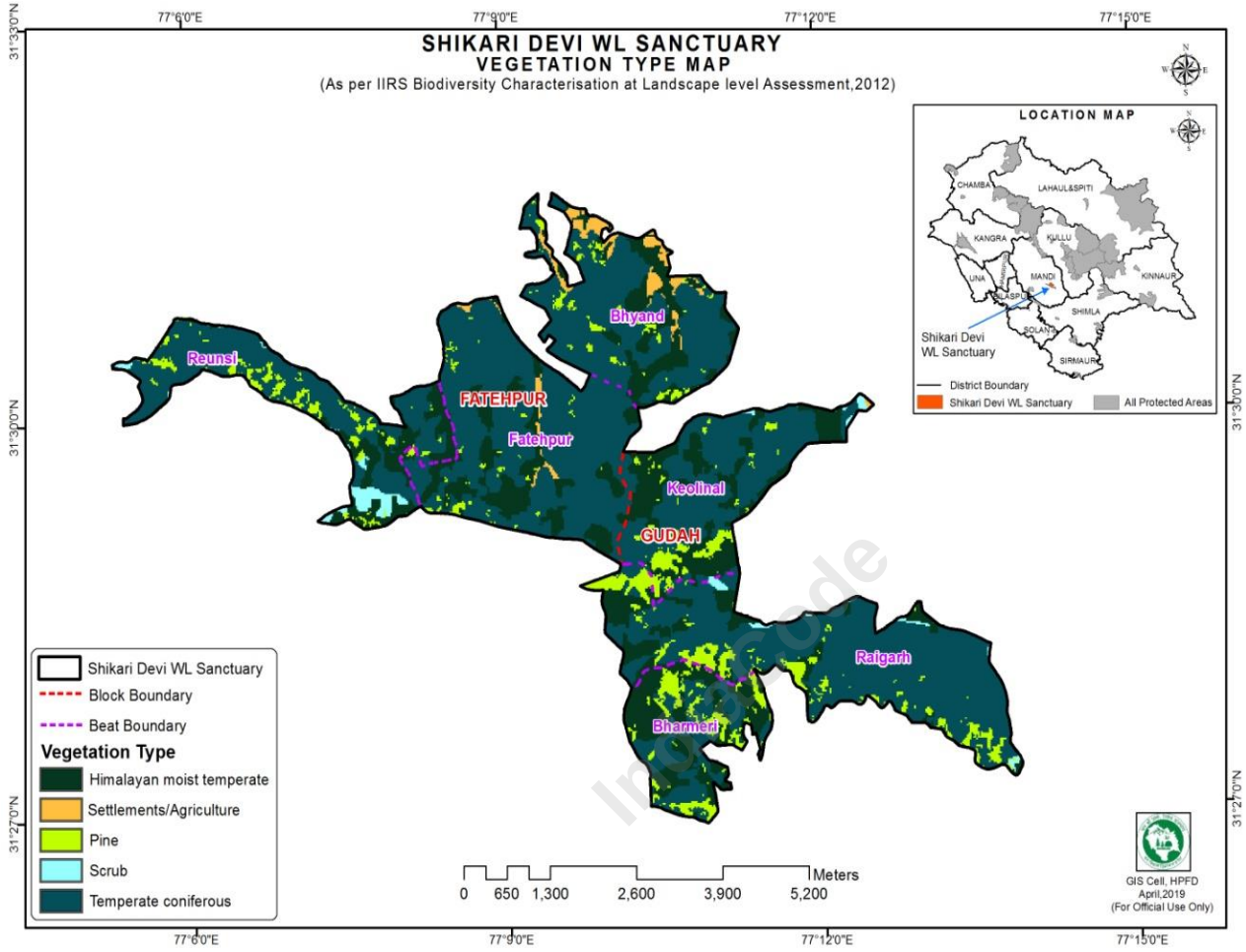
ANNEXURE-IIB

MAP OF ECO-SENSITIVE ZONE AROUND SHIKARI DEVI WILDLIFE SANCTUARY ALONG WITH LATITUDE AND LONGITUDE OF PROMINENT LOCATIONS



ANNEXURE-IIC

VEGETATION TYPE MAP OF SHIKARI DEVI WILDLIFE SANCTUARY



ANNEXURE-III

TABLE A: GEO- COORDINATES ALONG THE BOUNDARY OF SHIKARI DEVI WILDLIFE SANCTUARY

S.No.	Longitude	Latitude
1.	77^0 5’ 37.189” E	31^0 30’ 34.728” N
2.	77^0 9’ 54.931” E	31^0 28’ 42.916” N
3.	77^0 10’ 24.412” E	31^0 26’ 55.633” N
4.	77^0 11’ 56.09” E	31^0 27’52.001” N
5.	77^0 12’ 55.718” E	31^0 28’ 33.236” N
6.	77^0 12’ 14.464” E	31^0 30’ 2.11” N
7.	77^0 10’ 18.634” E	31^0 30’ 4.231” N
8.	77^0 9’ 22.642” E	31^0 31’ 45.734” N

TABLE B: GEO-COORDINATES OF PROMINENT LOCATIONS OF ECO-SENSITIVE ZONE

	Longitude	Latitude	Description (Landmarks)
North	$77^0$07’24.624” $77^0$09’20.421” $77^0$11’31.071”	$31^0$30’40.547” $31^0$32’01.425” $31^0$30’44.223”	DPF Dayot, Daint, Darotha, Lamb, Kalakameshwar, Shankar, Gadaunshill
South	$77^0$13’51.877” $77^0$12’06.124” $77^0$11’06.755”	$31^0$27’10.206” $31^0$27’40.978” $31^0$26’40.802”	Charati UF, Chajwara PF, Deokidhar PF, DPF Bishlon, Darahal, Deokidhar, Kathiala, Saprinal, Dharwar, Damehri, Darwaralshil and Khud

East	77^{0}12’37.898” 77^{0}12’29.653”	31^{0}29’49.664” 31^{0}29’07.447”	DPF Keolinal, Shodhashill, Raigarh and Riarashill and Charti UF.
West	77^{0}08’38.397” 77^{0}06’44.176” 77^{0}05’10.55”	31^{0}29’06.193” 31^{0}29’51.666” 31^{0}30’29.043”	DPF Churasni, UF Churasni, DPF Tokharinal, Charagti, Tungrasni to join northern boundary at Phalot

ANNEXURE-IV

LIST OF VILLAGES FALLING IN ECO-SENSITIVE ZONE OF SHIKARI DEVI WILDLIFE SANCTUARY ALONG WITH GEO-COORDINATES

Division	S.No.	Village Name	Latitude	Longitude
Karsog	1	Morahalla	31^0 27’ 35.1”N	77^0 11’37.9”E
	2	Churasani	31°27'07.5"N	77°11'08.5"E
	3	Dadwar	31°27'35"N	77°11'37.9"E
	4	Nasrar	31^0 27’ 52.7”N	77^0 11’ 42.4”E
Nachan	1	Khalouni	31^{0}29.925’N	077^{0}07.368’E
	2	Sodha dhar	31^{0}30.253’N	077^{0}06.583’E
	3	Tungrashan	31^{0}30.342’N	077^{0}6.259’E
	4	Kohadhar	31^{0}30.374’N	077^{0}06.148’E
	5	Upper Thahru	31^{0}30.275’N	077^{0}05.958’E
	6	Lower Thahru	31^{0}30.272’N	077^{0}05.887’E
	7	Upper Reyosi	31^{0}30.046’N	077^{0}05.387’E
	8	Lower Reyosi	31^{0}30.070’N	077^{0}05.329’E
	9	Dharawat	31^{0}30.66.4’N	077^{0}07.93.8’E
	10	Lower Dharawat	31^{0}30.70.4’N	077^{0}08.28’E
	11	Gurara	31^{0}31.0.86’N	077^{0}08.94.0’E
	12	Jamli	31^{0}31.0.92’N	077^{0}08.94.0’E
	13	Jaryad	31^{0}31.10.5’N	077^{0}09.11.4’E
	14	Dingali	31^{0}31.11.4’N	077^{0}09.0.13’E
	15	Jawal	31^{0}31.27.5’N	077^{0}08.9.19’E
	16	Narot	31^{0}31.41.4’N	077^{0}09.11.5’E
	17	Bayand	31^{0}31.29.1’N	077^{0}09.28.7’E
	18	Shal	31^{0}31.16.9’N	077^{0}09.35.2’E
	19	Banshil	31^{0}31.76.2’N	077^{0}09.18.5’E
	20	Lamb	31^{0}31.55.2’N	077^{0}09.3.01’E
	21	Upper Payala	31^{0}31.56.8’N	077^{0}09.3.01’E
	22	Lower Payala	31^{0}31.62.0’N	077^{0}09.8.45’E
	23	Murhala	31^{0}31.76.6’N	077^{0}09.11.5’E
	24	Mujharla	31^{0}31.35.1’N	077^{0}10.11.7’E
	25	Upper Jimdhar	31^{0}30.99.1’N	077^{0}10.4.14’E
	26	Lower jimdhar	31^{0}30.98.5’N	077^{0}10.52.4’E
	27	Upper Sauch	31^{0}31.26.9’N	077^{0}09.53.3’E
	28	Lower Sauch	31^{0}31.15.7’N	077^{0}09.66.5’E
	29	Upper Bungatu	31^{0}30.68.1’N	077^{0}09.86.4’E
	30	Lower Bungatu	31^{0}30.72.5’N	077^{0}09.80.4’E
	31	Ling	31^{0}30.20.4’N	077^{0}11.14.9’E
	32	Dhaliyara dwar	31^{0}30.35.8’N	077^{0}11.16.6’E
	33	Kilwa	31^{0}29.38.3’N	077^{0}12.56.6’E
	34	Silh	31^{0}29.41.2’N	077^{0}12.42.7’E
	35	Chaira	31^{0}28.35.1’N	077^{0}11.57.0’E
	36	Bansor	31^{0}28.43.5’N	077^{0}11.57.0’E
	37	Dhaliyar	31^{0}28.58.9’N	077^{0}12.03.4’E
	38	Janehar Doghari	31^{0}28.17.4’N	077^{0}13.58.3’E
	39	Lehara Doghari	31^{0}30.33.0’N	077^{0}13.33.1’E

ANNEXURE –V

DESCRIPTION OF AREA PROPOSED FOR ECO-SENSITIVE ZONE AROUND SHIKARI DEVI WILDLIFE SANCTUARY

Division	Sr.No.	Type	Name of Forest	Compartment	Area(Sq. Km)
Karsog	1	DPF	D-261 Bishlon	Part	0.135
	2		D-206 Darahal	Part	0.350
	3		D-205 Deokidhar	Part	0.195
	4		D-204 Kathiala	Part	0.565
	5		D-203 Saprinal	Part	0.0475
	6		D- 198 Dharwar	Part	0.485
	7		D-199 Damehri	Part	0.0875
	8		D-196 Dharwaralshil	Part	1.762
	9		D-112 Khud	Part	0.650
	10		D-111 Churasni	Part	2.926
	11	UF	UF-72 Churasni	whole	0.786
	12		UF-134 Charti	Part	0.235
				Sub-total	***8.2245***
Nachan	1	DPF	D-315 Tokharinal	C1,2a,2b,C3(Part)	0.25
	2		D-311Charagti	C1a-1c,C2a,2b(Part)	0.9625
	3		D-310 Tungrasni	C5(1,2,8a8b)Part	1.45
	4		D-406 Dayot	C1a,1b,C2a,2b (Part)	0.095
	5		D-309 Daint	C3,C4,C5a,5b (Part)	1.2675
	6		D-127 Darotha	C2-C8 (Part)	1.5825
	7		D-181 Lamb	Part	0.225
	8		D-255 Kalakameshwar	C5,C6 (Part)	1.30
	9		D-240 Shankar	C1 (Part)	0.3550
	10		D-167 Gadaunshil	Part	0.8325
	11		D-165 Keolinal	Part	0.6175
	12		D-163 Shodashil	Part	0.9375
	13		D-161 Raigarh	Part	0.4825
	14		D-160 Riarashil	Part	0.6225
				Sub-total	***10.98***
				G. Total	**19.2045**

ANNEXURE –VI

Performa of Action Taken Report:-

1. Number and date of meetings.
2. Minutes of the meetings: (mention noteworthy points. Attach minutes of the meeting as separate Annexure).
3. Status of preparation of Zonal Master Plan including Tourism Master Plan.
4. Summary of cases dealt with rectification of error apparent on face of land record (Eco-sensitive Zone wise). Details may be attached as Annexure.
5. Summary of cases scrutinised for activities covered under the Environment Impact Assessment Notification, 2006 (Details may be attached as separate Annexure).
6. Summary of cases scrutinised for activities not covered under the Environment Impact Assessment Notification, 2006 (Details may be attached as separate Annexure).
7. Summary of complaints lodged under section 19 of the Environment (Protection) Act, 1986.
8. Any other matter of importance.

Uploaded by Dte. of Printing at Government of India Press, Ring Road, Mayapuri, New Delhi-110064
and Published by the Controller of Publications, Delhi-110054.

ALOK KUMAR Digitally signed by ALOK KUMAR Date: 2022.01.06 21:36:21 +05'30'